

अगस्त 2013

दादावाणी

मूल्य: ₹ १०

कोरा

लड़ाई-झगड़े

मारपीट

जोड़

मजदगाली

जैसे सिनेमा में देखते हैं कि लोग मारपीट कर रहे हैं, झगड़े कर रहे हैं लेकिन फिर भी हम उसमें इमोशनल नहीं होते हैं न? जिस तरह उस सिनेमा में देखते हैं, उसी तरह अपने भीतरवाले पूरे सिनेमा को देखना, वही सामायिक है।



संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष : ८, अंक : १०

अखंड क्रमांक : ९४

अगस्त २०१३

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ. : अडालज,
जि. : गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

e-mail :

dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.

Owned by

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.

Printed at

Amba Offset

Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.

Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल

भारत : ७५० रुपये

यु.एस.ए. : १५० डॉलर

यु.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये

यु.एस.ए. : १५ डॉलर

यु.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D. / M.O.

'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

सामायिक द्वारा आत्मरसास्वाद

संपादकीय

सामायिक अर्थात् आत्मसम दशा, समता-समत्वभाव। एक गुंटाणा यानी अड़तालीस मिनट आत्मसम दशा, उसे सामायिक कहते हैं। देह के सम को सामायिक नहीं कहते। मुख्य तौर पर सामायिक दो प्रकार की है। एक व्यवहारिक सामायिक, जिसमें कि खुद क्रिया का कर्ता होकर एक गुंटाणा मन को स्थिर रखता है। मन स्थिर रहा, वह व्यवहार सामायिक। आत्मा खुद अचल है और पुद्गल चंचल है। जहाँ चंचलता है वहाँ अचलता का स्वाद कैसे आया? सामायिक में देह को अचल किया इसलिए फिर भीतर अचलता का स्वाद आता है। इस अनुभव के आधार पर आगे प्रगति करता जाए तो वह क्रमिक मार्ग की सामायिक है। और अक्रम की सामायिक यानी 'खुद' 'आत्मा', आत्मारूप होकर फाइल नं-१ को देखना। भगवान ने इसे आत्मसामायिक कहा। आत्म रमणता वह आत्मा की सामायिक। अध्यात्म संबंधी केवल आत्मा के ही ध्यान में रहना और भौतिक का कोई भी विचार नहीं आए, उसे शुद्ध सामायिक कहते हैं।

परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) कहते हैं कि आत्मा ही सामायिक है और आत्मा प्राप्त करने के बाद पाँच आज्ञा में रहे तो वह निरंतर सामायिक ही है। क्रमिक में आत्मा प्राप्त नहीं हुआ होता इसलिए आत्मभाव में नहीं रह पाता, किन्तु सामायिक में ज्यों-ज्यों दोष धुलते जाते हैं, विषमभाव दूर होता जाते हैं त्यों-त्यों आत्मभाव में रह पाते हैं। जबकि अक्रम में लिफ्ट मार्ग से आत्मा प्राप्त हो गया है, लेकिन दोष रूपी मल कोनिकालना बाकी है। तो जैसे-जैसे इन दोषों को आत्मरूप रहकर अलग देखता जाता है वैसे-वैसे उन दोषों की निर्जरा होती जाती है और त्यों-त्यों आत्मरसास्वाद प्राप्त होता जाता है।

यहाँ अक्रम में भरे हुए माल को खाली करने हेतु और शुद्ध उपयोग रखने हेतु ही सामायिक करनी है। अपने यहाँ सामायिक में, किसी भी प्रकार की गाँठ को और मन-वचन-काया के स्वभाव को विलय कर दे ऐसी अद्भुत शक्ति समाई हुई है। अक्रम सामायिक में जो ग्रंथि है वह ज्ञेयरूप है और 'हम' ज्ञाता हैं। ज्ञेय-ज्ञाता के संबंध से धीरे-धीरे सभी गाँठों को विलय करके निर्ग्रथ पद पर पहुँच सकते हैं। अपने यहाँ आत्मरूप होकर सामायिक करते हैं इसलिए आत्मा की स्वाभाविक सुख और आनंद उत्पन्न होता है और फाइल नं-१ के दोष ज्ञाता-दृष्टा के तौर पर देखते हैं इसलिए दोष-गाँठ सभी विलय होते जाती हैं, इस प्रकार दुगुना लाभ होता है।

सामायिक में शुद्धात्मा पद में स्थिर होकर मन-वचन-काया को ज्ञेय के रूप में देखना, उसे कायोत्सर्ग कहा गया है। दादाश्री कहते हैं कि यह तो कायोत्सर्ग से भी उच्च ध्यान है। इस सामायिक की कीमत पुनिया श्रावक के सामायिक जितनी है। क्योंकि, देखनेवाला कौन है? खुद 'आत्मा'। आत्मा जब ज्ञाता भाव में आए तो उसे आत्मचारित्र कहते हैं।

देखनेवाला आत्मा, अर्थात् आत्मा ज्ञायक और चंदूभाई ज्ञेय व दृश्य है। अर्थात्

क्रमशः पेज 4 पर

दादावाणी

यह तो आत्मा स्पष्ट हो गया। इसे 'स्पष्टवेदन' कहा गया है। सामायिक में इस तरह स्पष्ट होते-होते किसी को आत्मा का स्पष्टवेदन भी हो जाता है। इसीलिए इस सामायिक को अमूल्य कहा गया है न! यानी यह अक्रम का सामायिक तो अलौकिक है। इससे तो बहुत लाभ होता है।

इतना अद्भुत साधन प्राप्त हुआ है तो उसका उपयोग करके क्यों न काम निकाल लें? चलिए, प्रस्तुत संकलन में संकलित की हुई परम पूज्य दादाश्री की सामायिक से संबंधित ज्ञानवाणी की सैद्धांतिक समझ को आत्मसात करके, प्रयोग के रूप में लेकर मोक्षमार्ग में प्रगति करें।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

सामायिक द्वारा आत्मरसास्वाद

सामायिक के दो प्रकार

प्रश्नकर्ता : सामायिक यानी क्या?

दादाश्री : दो प्रकार की सामायिक; एक, अज्ञानी की सामायिक और एक, ज्ञानी की सामायिक। एक, व्यवहार में प्रचलित सामायिक, व्यवहारिक सामायिक जिसमें कि मन को एक दायरे से बाहर नहीं निकलने देते। अगर गया भी तो मार-ठोककर वापस ले आते हैं। मन को बाउन्ड्री (सीमा) में रखते हैं। जैसे किसी गाय को खेत की बाड़ से बाहर नहीं जाने देते, वैसे। बाहर जो चल रहा है उसमें मन स्थिर रहा, उसे (व्यवहारिक) सामायिक कहते हैं। ऐसा तय करते हैं कि आज दुकान याद नहीं करनी है। इस प्रकार सब तय करके फिर दायरे में बैठते हैं। फिर सब से पहले दुकान याद आती है। जिसे याद नहीं करना है कहते हैं न, वही पहले याद आ जाता है। फिर सबको धकेलता रहता है, दायरे में घुसने नहीं देता। जो कोई भी विचार आए न, उसे धक्का देकर निकाल देता है। दायरे में घुसने नहीं देता, यह है सामायिक। यह अज्ञानी की सामायिक।

और दूसरा, आत्मा की सामायिक। उसमें, आत्मा की रमणता रहती है। आत्मा की सामायिक बहुत

से पाप को जला देती है और मन की सामायिक भी कुछ ऐसी-वैसी नहीं मानी जाती। उससे पुण्य कर्म बंधते हैं।

व्यवहार सामायिक - निश्चय सामायिक

इस दुनिया की व्यवहारिक सामायिक यानी क्या? अड़तालीस मिनट तक किसी अन्य विचार में नहीं जाना, एक ही विचार में, बस यही सामायिक है। केवल आत्मा के ही विचार हों न, भौतिक के कोई भी विचार नहीं आएँ तो उसे शुद्ध सामायिक कहते हैं। अड़तालीस मिनट तक समताभाव में रहे, इससे ज्यादा फिर नहीं कर पाएगा, किसी से भी नहीं हो पाता।

और निश्चय सामायिक, आत्मा प्राप्त होने के बाद निरंतर पूरे दिन सामायिक ही रहती है। खाते समय, पीते समय भी सामायिक। आत्मा प्राप्त हो गया, आत्मासम वह सामायिक। अपने महात्माओं को सामायिक जैसी समता रहती है, इसमें कोई शक नहीं है।

प्रश्नकर्ता : हम तो अड़तालीस मिनटवाले में नहीं आते, हमें तो चौबीसों घंटों इस भाव में ही रहना है न?

दादाश्री : उस जैसा तो कुछ भी नहीं है न! उसकी तो बात ही अलग है!

अपना तो यह निरंतर ही सामायिक है। देखो न सभी को, किसी के मन में राग-द्वेष नहीं, झंझट नहीं, कुछ नहीं। आप यहाँ से उठ गए और कोई दूसरा आकर आपकी जगह पर बैठ गया तो आप किसी दूसरी जगह पर बैठ जाओगे, उधर बैठ जाओगे, अरे बाहर जाकर भी बैठ जाओगे कोई झंझट ही नहीं।

कायोत्सर्गपूर्वक सामायिक

भगवान ने कैसी सामायिक कही थी कि 'यह देह और यह सब मेरा नहीं है,' इस प्रकार का सामायिक कही थी। सामायिक तो कायोत्सर्गपूर्वक होनी चाहिए।

अब वे कायोत्सर्ग किस तरह करते थे? सभी उच्च मनुष्य, गणधर वगैरह जो कायोत्सर्ग करते थे वे ऐसे खड़े रहते थे, खंभे की तरह। फिर ऐसा तय करते कि मैं पैर नहीं हूँ, पेट नहीं हूँ, छाती नहीं हूँ, सिर नहीं हूँ, फुल्ल नहीं हूँ, इनका उत्सर्ग करते और और फिर भीतर तय करते थे कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ'। कैसा? वह यह कि, अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति, ऐसे पाँच-छः गुणधर्म उन्हें पता होते हैं। शास्त्र के शब्दों के आधार पर वे उन शब्दों को घोटते रहते थे। पहले उत्सर्ग कर देते थे, कायोत्सर्ग। इसे भगवान ने सबसे अंतिम उपचार कहा। जिसने अपना यह ज्ञान लिया हो वह कायोत्सर्गपूर्वक सामायिक करते हैं। कायोत्सर्गपूर्वक! वह बहुत ही कीमती है।

अपने आप नहीं हो सकता 'यह', इसलिए बैठना बार-बार

'यह मन-वचन-काया मैं नहीं, मैं शुद्धात्मा हूँ,' ऐसा ध्यान में रहे, उसे काउसगग कहते हैं। अब लोग यह काउसगग को समझते नहीं हैं। अभी यह ज्ञानविधि बोल रहे थे न, उस घड़ी कायोत्सर्ग ही था। 'मन-वचन-काया से भिन्न मैं प्रगट शुद्धात्मा हूँ,' ऐसा बुलवाया वह सब कायोत्सर्ग ही था।

मैंने आपको जो यह एक घंटा ज्ञानविधि करवाई

न, इसे सामायिक कहते हैं। अध्यात्म के संबंध में एक ध्यान में रहना वह सामायिक कहलाती है। ऐसी सामायिक मनुष्य से पूर्णरूप से अच्छी तरह हो नहीं पाती। उसके लिए, ज्ञानीपुरुष पाप धो देते हैं। जब तक पाप नहीं धुलते तब तक कुछ नहीं हो सकता।

जब हम फिर 'ज्ञान' देते हैं, तब आपसे क्या कहते हैं, कि फिर से बैठना। यह ऐसी सामायिक बार-बार नहीं होगी। इसलिए समय मिले तो बैठ जाना। यदि समय नहीं मिले तो काम निपटाने के बाद भी, लेकिन यहाँ आ जाना।

'मैं शुद्धात्मा हूँ' के लक्ष्य से निरंतर सामायिक

प्रश्नकर्ता : अपने अक्रम मार्ग में सामायिक का क्या महत्व है?

दादाश्री : हम सभी को पूरे दिन सामायिक ही रहती है, सामायिक से भी उच्च प्रकार का रहता है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा लक्ष्य, उसीको सामायिक कहते हैं। और वह भी फिर सच्ची सामायिक। ऐसी सामायिक पूरे दिन रहती है।

'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा जिसे एक घंटे तक रहा, वही सामायिक। रिलेटिव और रियल को देखा वह भी सामायिक। समभाव से निकाल (निपटारा) करने की आज्ञा का पालन करते हो, वही सामायिक है। हमारे पाँच वाक्य (आज्ञा) वे सामायिक रूप ही हैं!

हमारी आज्ञा का पालन करे उस घड़ी आत्मासम, यानी सामायिक ही मानी जाती है। हमारी पाँच आज्ञा का पालन करे, वह निरंतर सामायिक है।

और ज्ञानी की सामायिक मतलब वे जहाँ भी बैठें वहीं सामायिक, रात को जब सो जाते हैं उसे भी सामायिक कहते हैं।

विषमभाव नहीं होना, वही सामायिक

प्रश्नकर्ता : सामायिक शब्द का भावार्थ ज़रा ठीक से समझाइए।

दादाश्री : सामायिक का अर्थ एकाग्रता नहीं है, सामायिक का सही अर्थ ऐसा है कि किसी भी कारणवश विषमभाव नहीं होने दें, भले ही सम नहीं रहे, किन्तु विषम नहीं होने दे, उसे सामायिक कहते हैं। वहाँ दस ग्लास गिर गए ऐसा पता चले, फिर भी भीतर समता रखता है।

बेटा अपनी माँ को गालियाँ दे रहा हो, उस घड़ी बाप सहन नहीं कर पाता लेकिन क्योंकि सामायिक में बैठा है इसलिए मन में ऐसा निश्चय रहता है कि 'अभी मैं सामायिक में बैठा हूँ, इसलिए मुझे विषमता नहीं करनी है।' अतः खुद सुनता है फिर भी विषमभाव नहीं होता। भीतर उछाल तो आता है लेकिन उसे सम कर डालता है। जैसे कि, कुछ तौलते समय यदि एक पलड़ा भारी होकर नीचे आ जाए तो दूसरे पलड़े में थोड़ा डालता है और अगर फिर पहलेवाला पलड़ा ऊपर चला जाए तो उसमें थोड़ा डालकर दोनों को एक समान कर देता है। तराजू का पलड़ा झुक नहीं जाता एक भी तरफ, उसे सामायिक कहते हैं। सामायिक यानी तराजू का पलड़ा एक्जैक्ट रहे! विषमता नहीं किन्तु समता। ऐसी सामायिक करे तो काम ही हो जाए न!

अर्थात् सामायिक का सही अर्थ आज निकला, एक्जैक्ट। वह जो तीर्थकरों के हृदय में था। वह अर्थ प्रचलित नहीं है। आज दो हजार सालों से कोई जानता ही नहीं। सामायिक अर्थात् विषमता नहीं होने देना, वह। खुद के पास ज्ञान नहीं है और विषमभाव नहीं होने देना है! ओहोहो! यह तो बहुत बड़ा आश्चर्य है! हालाँकि यह अर्थ अभी प्रचलित नहीं है, किन्तु सामायिक का मूल अर्थ यही है।

मेंढक की पाँचसेरी जैसा नहीं होता। मेंढक से पाँचसेरी करने जाए तभी मुश्किल खड़ी हो जाती है न! वहाँ समता नहीं रहती।

मेंढक की पाँचसेरी

प्रश्नकर्ता : दादा, मेंढक की पाँचसेरी, इसकी हकीकत क्या है, वह समझाइए।

दादाश्री : ऐसा है न, इस तरफ यदि पाँच सेर का बाट रखा हो और अगर पाँच सेर का दस सेर करना हो, तो दूसरी तरफ पाँच सेर की कोई और चीज़ रखनी पड़ेगी। पत्थर, ढेला या अन्य कुछ भी रखना पड़ेगा या फिर गेहूँ होंगे तो भी चलेंगे। पाँच सेर तौलने के बाद फिर से इस पलड़े में पाँच सेर चीज़ रख दें, तो फिर दस सेर तौला जा सकेगा। पाँचसेरी करने के लिए क्या करते हैं? एक तरफ पाँच सेर रखते हैं और दूसरी तरफ कोई और साधन नहीं मिला तो, किसी ने मेंढक रख दिए! अब वह इधर से दो मेंढक रखने जाता, तो पहलेवाले तीन कूदकर बाहर निकल जाते। यानी वह उन्हें पकड़-पकड़कर अंदर रखता उससे पहले तो दूसरे कूदकर बाहर निकल जाते। इसलिए पाँचसेरी हो नहीं पाती थी। ऐसी इन लोगों की सामायिक होती है।

अर्थात् तराजू ऊपर-नीचे होती रहती हैं। लोगों का, मेंढक की पाँचसेरी जैसा है, कभी भी सामायिक नहीं हो पाती। उन्हें अगर ऐसा कहें तो लड़ पड़ेंगे कि, 'अरे, हमारी सामायिक को मेंढक की पाँचसेरी जैसा कहते हो?' अरे भाई, अब नहीं कहेंगे! तराजू का पलड़ा ज़रा ऊपर-नीचे था, इतना ही कहते हैं। बाकी, है तो मेंढक की पाँचसेरी जैसा ही है न? यहाँ से दो रखने गए कि अंदर के तीन कूदकर बाहर निकल आए। फिर क्या कभी पाँचसेरी हो पाएगी?

प्रश्नकर्ता : नहीं हो पाएगी।

जो आत्महेतु के लिए हो, वह सब सामायिक

आत्महेतु के लिए जो कुछ भी किया जाता है, वह सब सामायिक है। समभाव में आने के लिए, वह सब सामायिक ही कहलाती है। जहाँ मन-वचन-काया का उपयोग नहीं है, मन-वचन-काया का उपयोग नहीं करना है उसे सबसे उच्च सामायिक कहते हैं।

सामायिक अर्थात् आत्मा-समदशा, आत्म सम, उसे सामायिक कहते हैं। देह के 'सम' को सामायिक

नहीं कहते। देह के हिलने-डुलने में हर्ज नहीं है, किन्तु आत्मा सम रहे तो वह सच्ची सामायिक है, आत्मा विषम नहीं हो जाना चाहिए। आपको समझ में आया यह?

प्रश्नकर्ता : वह स्थिति कैसी होती है?

दादाश्री : अंतिम स्थिति के नजदीक की।

प्रश्नकर्ता : उस वक्त मन की स्थिति कैसी होती है?

दादाश्री : मन इन सबको देखता ही रहता है। आत्म सम है, ऐसा मन देखता ही रहता है। मन-चित्त-बुद्धि सभी एक होकर उसे देखते ही रहते हैं। सभी स्थिर हो जाते हैं। जब इन सभी की चंचलता का नाश हो जाए, तब आत्मासम हो पाता है।

आत्मा को जानने पर ही समभाव प्राप्त हो सकता है। समभाव में रहना, वही सामायिक है और विषमभाव में रहना वह है संसार।

आत्मा, वही सामायिक

*‘भगवान अंगे भाषिओ, सामायिक अर्थ,
सामायिक पण आत्मा, धरे सीधो अर्थ।’*

सामायिक का अर्थ तो भगवान ने बताया है, ‘सामायिक ही आत्मा है और आत्मा ही सामायिक।’

आत्मा खुद ही सामायिक है। खुद असामायिक के पद पर हो और सामायिक करने बैठे, तो सामायिक पद की ऐसी मान्यता से वह सामायिक को कब प्राप्त कर पाएगा?

अर्थात् यह जो व्यवहार सामायिक है, यह (आत्म) सामायिक नहीं है। सामायिक किसे कहते हैं? आत्मासम, वह है सामायिक। आत्मस्वरूप में रहे वह है सामायिक। आपकी तो पूरे दिन सामायिक चलती है, पूरे दिन यह (शुद्धात्मा का लक्ष्य), यही सामायिक है।

आज्ञापालन पर कैसी सामायिक?

सभी में शुद्धात्मा देखते हो न अब?

प्रश्नकर्ता : हाँ, देखता हूँ लेकिन कभी-कभी विस्मृत हो जाता है।

दादाश्री : कभी-कभी विस्मृत हो जाता है, लेकिन कभी-कभी तो देखते हो न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, देखता हूँ।

दादाश्री : इस प्रकार देखने का अभ्यास करे तो उससे भीतर पुनिया श्रावक जैसी सामायिक होती है। पूरे दिन समाधि रहती है! इन पाँच वाक्यों (आज्ञा) में अगर एक घंटे के लिए रहो न, तो यह पुनिया श्रावक की सामायिक है। कीमत जानते हो या नहीं उस सामायिक की?

पुनिया श्रावक की सामायिक

श्रेणिक राजा को जब नर्क में (जाएँ ऐसा कर्मबंधन) जाने का हुआ तब महावीर भगवान ने सभी उपाय बताए। उन्होंने भगवान से कहा ऐसे उपाय बताइए कि ‘नर्क में जाना टल जाए’। ‘भगवान आप मुझे मिले हैं फिर भी मुझे नर्क में जाना पड़े?’ तब भगवान ने कहा, ‘भाई, इसमें कोई क्या कर सकता है? इसमें किसी का कुछ नहीं चलता, वह तो जो आयुष्य बंद गया सो बंद गया, उसमें नहीं चलता!’ फिर भी राजा ने कहा कि ‘कोई उपाय बताईए’। फिर भगवान ने चार उपाय बताए, कि उनमें से कोई भी एक लेकर आओगे तो आपको नर्क में नहीं जाना पड़ेगा। उनमें से तीन उपाय फेल (असफल) गए। उसके बाद पुनिया श्रावक की सामायिक का उपाय आया। तब श्रेणिक राजा ने कहा कि ‘वह तो मैं पुनिया श्रावक से ले आता हूँ।’

श्रेणिक राजा पुनिया श्रावक के पास गए। उन्होंने कहा, “तुम मुझे सामायिक दे दो। तुम मेरे राज्य में रहते हो, सामायिक की तुम जो भी कीमत माँगोगे

वह मैं तुम्हें दूँगा। सामायिक यानी अड़तालीस मिनट का तुम्हारा जो फल हो उतना तुम मुझे दे दो। तुम मुझ से इतना कहो कि 'मैंने आपको दिया, अर्पण किया,' इतना कहो।" तब पुनिया श्रावक ने कहा, 'साहब, वह नहीं दिया जा सकता। वह देने जैसी चीज़ नहीं है।' राजा ने कहा 'क्यों नहीं दे सकते? तुम्हें देना ही पड़ेगा। ना शब्द कहना ही मत।' तब कहा 'वह नहीं दिया जा सकता, यदि भगवान कहें तो दे सकता हूँ।' तब राजा ने कहा, 'भगवान ने कहा है कि आपको पुनिया श्रावक की सामायिक लानी है। तुम्हें उसकी क्या कीमत लेनी है?' वह बेचारा बहुत दवाब में आ गया इसलिए फिर कहा, 'ठीक है, अगर भगवान ने कहा है तो मैं दूँगा।' राजा को लगा कि यह हाथोंहाथ कोई प्रोमिस देनेवाला है। उन्होंने कहा, 'बोल, क्या कीमत लेनी है तुझे?' वे तो राजा थे इसलिए सिर पर किसी का उपकार रहे, वे ऐसा नहीं कर सकते थे न! तब पुनिया कहता है, 'वह तो भगवान जो कहेंगे वह कीमत लूँगा।'

इसलिए फिर राजा को पक्का हो गया कि, यह देने के लिए राजी हो गया है, सौदा हो गया है तो अब क्या हर्ज है! फिर राजा ने आकर भगवान को सब बताया। उन्होंने कहा, 'आज बहुत अच्छा शगुन हुआ है।' तब भगवान कहे, 'कैसा शगुन हुआ है?' राजा ने कहा, 'वह(पुनिया) सामायिक देने के लिए राजी हो गया है, राजी-खुशी से रज़ामंदी दी है। अब नर्कगति में नहीं जाना पड़ेगा न?' तब भगवान कहते हैं, 'लेन-देन में क्या तय किया है?' राजा को लगा 'ओहो! पाँच-दस लाख दिलवा देंगे, क्या कहेंगे सिर्फ अड़तालीस मिनट के?' 'किन्तु अब मेरी नर्कगति नहीं होगी न!' तब भगवान ने कहा, 'तब तो नहीं होगी लेकिन तुम्हें किसने कहा? आपको सामायिक किस तरह से दी?' तब राजा ने कहा, 'उसने तो आप पर ही छोड़ा है। अब आप जो भी कीमत कहेंगे, वह मैं उसे दे दूँ।' तब भगवान ने कहा, 'मुझ पर छोड़ा है? उसकी कीमत तो मैं जानता ही हूँ न! और मैं ऐसा-

वैसा कुछ कैसे कह सकता हूँ?' तब राजा कहते हैं कि 'जो कीमत हो वह मुझे बताइए, अभी दे देता हूँ।' तब भगवान कहते हैं, 'देखो मैं तुम्हें समझाता हूँ, उसकी कीमत क्या है वह तुम जानते हो? तुम्हारा राज्य तो सिर्फ उसकी दलाली में चला जाएगा। सिर्फ तीन प्रतिशत की दलाली में तुम्हारा राज्य चला जाएगा, इतनी कीमत है इसकी। यानी मूल रकम तो देनी बाकी ही रही। वह कहाँ से लाकर दोगे?' इस पर राजा ने पूछा, 'मेरा राज्य सिर्फ दलाली में चला जाएगा? तो और पूँजी कहाँ से लाकर दूँ? यानी अब तो मेरी नर्कगति रुक ही नहीं सकती न?' तब भगवान ने कहा, 'इस सामायिक की इतनी अधिक कीमत है, तुमसे पेमेन्ट (भुगतान) नहीं हो सकेगा!' फिर राजा ने खुद ने ही मना कर दिया कि 'नहीं साहब, मैं नहीं चुका पाऊँगा।' अतः फिर उन्होंने प्रयत्न बंद कर दिया और आराम से नर्कगति में गए, और (अगली चौबीसी के) पहले तीर्थकर होकर आएँगे, 'पद्मनाभ' नामक!

प्रश्नकर्ता : पुनिया श्रावक की सामायिक कैसी थी?

दादाश्री : आप सब (महात्मा) जो सामायिक करते हो वैसी सामायिक। क्रमिकमार्ग में वह वहाँ तक ले गया था।

इसे शुद्ध सामायिक कही

प्रश्नकर्ता : जिसकी सामायिक का भगवान महावीर ने बखान किया, उसका क्या रहस्य है, ज़रा समझाइए।

दादाश्री : वह शुद्ध सामायिक थी। ऐसी सामायिक करने की, मनुष्य की बिसात ही नहीं है न! शुद्ध सामायिक, यह मैंने आपको जो दी है, ऐसी दिव्यचक्षुवाली सामायिक थी।

वे (पुनिया श्रावक) भले ही घर में रहते, या बाहर घूमते, फिर भी उनकी सामायिक शुद्ध थी उनकी सामायिक दिव्यचक्षु के आधार पर थी। वे रूई लेकर

आते, उसकी पूनी बनाकर फिर उसे बेचते थे, इसलिए वे पुनिया श्रावक कहलाते थे। पूनियाँ बनाते समय उनका मन कताई के तार में रहता था और चित्त भगवान में रहता था। इसके अलावा बाहर वे कुछ भी देखते-करते नहीं थे, दखल ही नहीं करते थे। मन को व्यवहार में रखते थे और चित्त को निश्चय में रखते थे। तो यह सब से ऊँची सामायिक कहलाती है।

यह रिलेटिव और रियल मैंने आपको दिया है, वाक्य के रूप में। उसका अगर आप एक घंटे के लिए उपयोग करो सच्चे मन से और सच्चे चित्त से, यानी मन से यह देखते हुए आगे जाना है कि ठोकर नहीं लगे और चित्त से रिलेटिव और रियल को देखते रहना है, तो आपकी भी पुनिया श्रावक जैसी ही सामायिक हो सकती है। मगर यदि अब आप वैसा करो तो वह आपकी!

इतनी अधिक कीमत है इस सामायिक की इसलिए लाभ उठा लेना। सामायिक करते समय भीतर समाधि अच्छी रहती है न? और यह आसान है, मुश्किल नहीं है।

जो आज्ञापालन से हो पाए वह शुद्ध सामायिक

सामायिक यानी क्या करना है? ये जो दो व्यू पोइन्ट दिए हैं न, तो सबके भीतर शुद्धात्मा देखते हुए जाएँ सब्जी लेने। फिर भले ही रास्ते में जितने भी मनुष्य हो, या फिर बैल जा रहा हो, गधा जा रहा हो, गाय-बकरी, जीवमात्र में आज्ञापूर्वक (रियल-रिलेटिव) देखते-देखते जाना और आज्ञापूर्वक वापस आना। तो एक तो घर के लोगों ने कहा हो कि सब्जी ले आओ, तो आप चलकर ले आए इसलिए पैसे खर्च नहीं हुए। और दूसरा क्या फायदा हुआ? तब कहे, दादा की आज्ञा का पालन किया। तीसरा फायदा यह कि सामायिक हो गई। चौथा फायदा क्या हुआ? वह यह कि सामायिक के फलस्वरूप, समाधि रही। अर्थात्, इन सभी आज्ञाओं का पालन करना। कुछ नहीं तो एक घंटा निकालना न! नहीं निकल सकता?

प्रश्नकर्ता : जब कभी भी आपको याद आ जाए, काम-काज खत्म करके आप कहीं जा रहे हों या फिर गाड़ी में बैठे हों या फिर काम-काज करते हुए भी कभी यह याद आ जाता है, तब फिर यह प्रवृत्ति (रियल-रिलेटिव देखने की) शुरू हो जाती है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन रोज़ ऐसा तय करना कि कुछ समय ऐसा निकालना है, घंटेभर का, कि तब शुद्धात्मा देखते-देखते जाना और देखते-देखते आना। मनुष्यों हो, गधे हो, कुत्ते हो, गाय हो, भैंस हो, सभी में शुद्धात्मा दिखाई दे। इन स्थूल आँखों से गाय दिखाई दे और भीतर की आँखों से शुद्धात्मा दिखाई दें। पुनिया श्रावक की ऐसी ही सामायिक थी। तभी मैं आपसे कह रहा हूँ न, कि आपको पुनिया श्रावक की सामायिक दी है, प्योर सामायिक। यानी इस काल में ऐसी सामायिक हो सकती है। अब अगर आपको यह भोगना आए तो भोगना (यदि लाभ लेना आए तो लाभ उठा लो)। अगर लाभ नहीं होता तो (तुम्हारी ही) भूल है न!

एक घंटे के लिए, रिलेटिव और रियल, दोनों को देखते-देखते-देखते, ठीक से वह उपयोग रखें, तो इसे भगवान ने शुद्ध उपयोग कहा है। ऐसा शुद्ध उपयोग यदि एक *गुंठाणा* (४८ मिनट) तक रहे न तो पुनिया श्रावक की सामायिक हो जाए ऐसा है। आप कर सको तो अवश्य लाभ उठाना चाहिए।

भीतर मन भले ही कितनी भी दखलंदाजी करे फिर भी उसे कहना कि 'अभी बैठ जाओ, एक घंटे बाद आना, जिन्हें भी आना हो आना।' और फिर भीतर आते हैं न, शोर मचानेवाले होते हैं न, उन्हें कहना कि 'अभी चुप हो जाओ, अभी एक घंटे के लिए सब बंद है। हमारी सामायिक चल रही है। अभी मत आना। अंदर होम डिपार्टमेन्ट (आत्मा) में किसी को घुसने का अधिकार नहीं है, फौरन (अनात्म विभाग) में रहो। हम एक घंटे के बाद बाहर निकलें; तब देखेंगे।' तो फिर सब अपने आप बंद हो जाएगा। हम

ऑर्डर करें उसी मुताबिक वे चलेंगे। क्योंकि वे सभी चीजें निर्जीव हैं लेकिन सचेतन हो गई हैं, सचेतन भाव को प्राप्त किया है। अतः घंटाभर यह सामायिक करना। झड़कर सभीकुछ निकल जाएगा।

समझो कीमत इस सामायिक की

ऐसी सामायिक आपको यहाँ रोज़ करवाते हैं। किन्तु लोग इसका महत्व नहीं समझते, पान खाकर फिर थूँक देते हैं!

प्रश्नकर्ता : किसी आदिवासी को अगर हीरा दिया हो तो वह उसे काँच ही समझेगा न?

दादाश्री : हाँ, ऐसा ही है। बालक के हाथ में रतन देने जैसी बात है। फिर भी कभी न कभी गाड़ी चल पड़ेगी। बालक फिर बड़ा होता जाएगा। एक-दो बार उसके हाथ से कोई ले लेगा, लेकिन वापस वह 'दादा' से लेकर, बाद में किसी को नहीं देगा। एक बार अगर रोका हो, कि अब धोखा मत खाना। तो अब नहीं देगा, है न? ऐसी सामायिक हुई हो न, तो आनंद भी वैसा ही आता है।

जगत् विस्मृति, वही सामायिक!

इन सबको दादा याद रहते होंगे न पूरे दिन? और दादा याद रहे तब क्या होता है कि जगत् विस्मृत हो जाता है। कोई एक याद रहता है या तो जगत् याद रहता है, तब दादा याद नहीं रहते और दादा याद रहें तो जगत् विस्मृत हो जाता है। जगत् की विस्मृति हुई तभी से कर्म कम लगने लगते हैं। तो लोगों को तो सामायिक में भी जगत् विस्मृत नहीं हो पाता। कृपालुदेव जगत् विस्मृत करने का ही कहते थे। एक घंटे के लिए भी अगर जगत् विस्मृत हो जाए तो उसकी कीमत तो उन्होंने बहुत बड़ी बताई है।

कष्ट उठाए बिना जगत् की विस्मृति, वह है सामायिक। अभी मेरी उपस्थिति में आप सबकुछ भूल गए हो या नहीं भूले हो? इसे सामायिक कहते हैं। यहाँ सांसारिक बातें बिल्कुल भी हैं ही नहीं। यहाँ आत्मा

और परमात्मा, ये दो ही बातें हैं। तो ये जो आप सबकुछ भूल गए न, यही सबसे उच्च सामायिक। और कुछ नहीं आए फिर भी यहाँ आकर थोड़ी देर बैठना, घंटेभर बैठकर फिर चले जाना! देखो, निरे पाप ही धुल जाएँगे। भस्मीभूत हो जाएँगे सारे पाप। सामायिक में पाप भस्मीभूत हो जाते हैं। ज्ञानीपुरुष की अद्भुतता है!

प्रश्नकर्ता : आपके पास बैठते हैं तो वह कौन सी सामायिक कहलाती है?

दादाश्री : वह तो अपूर्व सामायिक कहलाती है। पुनिया श्रावक की सामायिक जैसी सामायिक कहलाती है।

सामायिक का अर्थ क्या है? जो जगत् विस्मृत करवा दे। चोर-डाकू की बातें भी जगत् को विस्मृत करवा देती है। आप घर पर गए और अभी भोजन में थोड़ी देर हो तो आप अकुलाकर कोई चोर-डाकू की कहानी की किताब पढ़ने बैठ जाते हो। फिर अगर थोड़ी देर बाद वे (पत्नी) आपको बुलाने आएँ कि 'चलो खाना खाने,' तो आप नहीं उठते। अरे, ऐसा क्यों? वह इसलिए कि, उस किताब में एकाग्र हो गए। क्योंकि मनुष्य को निम्न कोटि में ले जानेवाले संस्कार जल्दी एकाग्र करते हैं। अतः पूर्णरूप से एकाग्र हो जाते हैं, इसलिए उठता नहीं है फिर। अब उस समय भी जगत् विस्मृत हो जाता है लेकिन यह अधोगति में ले जाएगा। अपना ही धन खर्च करके मार खिलाता है। और सामायिक जो कि ऊर्ध्वगामी है, उसमें थोड़ी देर लगती है, जगत् विस्मृत होने में देर लगती है।

आत्मा प्राप्त करने के बाद घंटेभर संसार याद नहीं आए, तो वह सामायिक कहलाती है।

देखते रहना, वह है सामायिक

यहाँ अपने अक्रम में (व्यनहारिक) सामायिक, ध्यान या ऐसी कोई क्रिया नहीं है। ऐसा तो बाहर व्यवहार में होता है। और अक्रम में तो, जो घुस जाता

है, भीतर जो कुछ भी हो रहा है उसे देखते ही रहना है। अपनी यह अक्रम की सामायिक कैसी है कि जो भी विचार आए फिर वे खराब आए या अच्छे आए, सभी को 'देखना' है, सिर्फ देखते ही रहना है। जैसे कि सिनेमा में देखते हैं न! कि लोग लड़ाई कर रहे हैं, कोई दंगा कर रहे हैं लेकिन आप उसमें 'इमोशनल' (भावनाशील) नहीं होते हो न? ठीक वैसे ही (हमारी) भीतर का पूरा सिनेमा देखना वह सामायिक है। अड़तालीस मिनट तक किया तब तो बहुत काम हो जाएगा।

भगवान महावीर द्वारा बताई गई यथार्थ सामायिक, जो हम सब अक्रम में करते हैं न! एक गुंठाणा यानी कि अड़तालीस मिनट तक खुद आत्मस्वरूप में रहकर अपनी फाइल नं-१ को देखते हैं, वह है।

अक्रम सामायिक की यथार्थ समझ

प्रश्नकर्ता : यह अपनी अक्रम की सामायिक के बारे में विस्तारपूर्वक समझाइए न!

दादाश्री : अपनी सामायिक तो यह है कि आत्मरूप रहकर यह देखना कि भीतर चंदूभाई (फाइल नं-१) का तंत्र कैसे चल रहा है। चंदूभाई को यह विचार आया, वह विचार आया, फलौं आया, उन सभी को देखना। 'हम' देखनेवाले। विचार, वह दृश्य और 'हम' दृष्टा। और, समझ में आए ऐसे जो भी विचार हों वे ज्ञेय कहलाते हैं और 'हम' ज्ञाता।

फिर, चंदूभाई की बुद्धि क्या कर रही है, चित्त क्या कर रहा है? पैर में दर्द है वहाँ चंदूभाई का ध्यान है या नहीं, यह सब 'हमें' जानना है। पेट में भूख लगी हो तो उसे भी जानना है और किसी बाहरवाले का विचार आया, तो उसे शुद्ध देखना, यह है अपनी सामायिक। शुद्ध रहना, शुद्ध देखना। रातभर किच-किच की हो और फिर सामायिक में बैठे, तब फिर उसे शुद्ध देखना और कहना, 'चंदूभाई, माफी माँग लो'।

मात्र देखने और जानने का अभ्यास

प्रश्नकर्ता : सामायिक करते समय ज्ञाता-दृष्टा पद में रहते हैं यह बात ठीक है, किन्तु उस समय मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार की स्थिति कैसी होती है? सामायिक करते समय खास तौर से क्या-क्या ध्यान रखना चाहिए?

दादाश्री : ये मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार क्या-क्या कर रहे हैं, वह देखते रहना। जैसे कि आप 'सुपरवाइज़र' (निरीक्षक) हो और साहब ने कहा हो कि इनका 'सुपरविज़न' (निरीक्षण) करो, तब फिर आप क्या करोगे?

प्रश्नकर्ता : सबकी ओर देखना है कि वे क्या-क्या कर रहे हैं?

दादाश्री : सुपरविज़न ही करना है, किसी को धौल-वौल नहीं लगानी है। उसी तरह मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार को देखते ही रहना है।

सामायिक में भीतर आत्मा को जुदा रखने का प्रयत्न करते रहना और अंदर का बाकी सबकुछ देखते ही रहना है। 'देखना और जानना' 'आत्मा' ये दो ही अभ्यास करता रहता है। आत्मा और किसी अभ्यास में नहीं जाता। 'जो हुआ' उसे देखता रहता है। मन किस धर्म में है, बुद्धि किस धर्म में है, वह सब देखता रहता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर इसमें भूतकाल को याद करने की ज़रूरत नहीं है?

दादाश्री : (सही में) भूतकाल को याद नहीं करना है, सामायिक करनी है। सामायिक करना अर्थात् भीतर जो भी चल रहा है, उसे आत्मा देखता रहता है। उस घड़ी आत्मा पूर्णरूप से ज्ञाता-दृष्टा रहता है।

सामायिक करते समय शुद्ध उपयोग

प्रश्नकर्ता : हम जो भी सामायिक करते हैं, जो कोई भी विचार आएँ उन्हें देखें, उसका परिणाम क्या आता है?

दादाश्री : उससे शुद्ध उपयोग रहता है। विचारों को देखना, वही अपना ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव है। खुद के स्वभाव में आ गए, उसे शुद्ध उपयोग कहते हैं। अतः सामायिक में अगर आप विचारों को देखते हो तो फिर आप शुद्ध उपयोग में ही हो।

ज्ञाता-दृष्टा रहने पर, होती है सामायिक

प्रश्नकर्ता : जैसा कि आपने कहा, ज्ञाता-दृष्टा रहें तो क्या पूरा दिन ही सामायिक चलती रहेगी, दादा?

दादाश्री : ज्ञाता-दृष्टा रहे, उसे ही सामायिक कहते हैं। बाकी सारी सामायिक तो, इस ओर जा पाएँ इसलिए हैं। अन्य सभी सामायिक क्या हैं? 'मैं चंदूभाई नहीं हूँ' ऐसा (लक्ष्य) उसे ही सामायिक कहते हैं। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' की ओर जाना, उसे सामायिक कही है और पूर्ण सामायिक कौन सी है? तो ज्ञाता-दृष्टा, वही। ऐसा जितनी देर तक रह पाए, दस मिनट, पंद्रह मिनट रह पाए, उतना समय सामायिक कहलाती है। अब जब कोई काम नहीं हो और सोने ही जाना है, तो चलो थोड़ी सामायिक कर लें। सोने के समय में कटौती करके थोड़ी देर बैठे-बैठे या लेटे-लेटे सामायिक कर लें। अब देखना क्या है? ज्ञाता-दृष्टा को। आपको यह देखना है कि चंदूभाई क्या कर रहे हैं? चंदूभाई का मन क्या कर रहा है? बुद्धि क्या कर रही है? चित्त, डिस्चार्ज चित्त क्या कर रहा है? डिस्चार्ज अहंकार क्या कर रहा है? यह सब देखना है।

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : यदि ऐसा दिखे जो समझ में नहीं आए, पहचाना नहीं जाए, मगर दिखाई दे तो वह दृष्टापन कहलाता है और, 'मन ये-ये विचार कर रहा है,' ऐसा एक्जेक्ट दिखाई दे तो वह ज्ञातापन है। ज्ञाता-दृष्टा। उस घड़ी आनंद तो होता ही है। आनंद को ढूँढने नहीं जाना पड़ता।

जो आए उसे देखते रहना

प्रश्नकर्ता : सामायिक में विचार आते हैं और

'दादा भगवान ना असीम जय-जयकार हो,' ये दोनों ही चलते हैं, तो यह क्या है?

दादाश्री : यदि यहाँ पड़ोस में तेल की घानी में से आवाज़ आ रही हो और आप यहाँ कताई कर रहे हों तो आप क्या करोगे? वैसे ही यह मन की चक्की चलती ही रहेगी। आपको उसे देखते ही रहना है। खराब विचार या अच्छे विचार, देखते ही रहना है। पड़ोसी की घानी को क्या बंद कर सकते हैं? उससे घबराने की ज़रूरत नहीं है। हम यहाँ सत्संग कर रहे हों। आप अपने स्टडी रूम में हों और बाहर हुल्लड हो रहा हो तो उसमें आपको क्या है? मन ज्ञेय है और आप ज्ञाता बन गए हैं।

तब होंगे केवलज्ञान सत्ता में

भीतर की मशीनरी को ढीला नहीं छोड़ना है। आपको उस पर देख-रेख रखनी है कि मशीनरी कहाँ-कहाँ घिस रही है, क्या हो रहा है वह सब आपको पता चलना चाहिए। किसके साथ कड़क वाणी बोले, यह बोले उसमें हर्ज नहीं है, आपको देखते रहना है कि ओहोहो! चंदूभाई कड़क वाणी बोले, उसे देखते रहना है।

अंदर खराब विचार आए तो उसे भी देखना है, अच्छे विचार आएँ तो उन्हें भी देखना है। खराब के प्रति द्वेष नहीं और अच्छे के प्रति राग नहीं। आपका खुद का ही अंदर का यह सब देखते रहोगे न, उस समय आप केवलज्ञान सत्ता में होंगे। किन्तु अंश केवलज्ञान होता है, सर्वांश नहीं हो सकता।

निर्ग्रंथ होने के लिए सामायिक

मन गाँठों का बना हुआ है। हममें गाँठें नहीं हैं इसलिए हम निर्ग्रंथ कहलाते हैं। गाँठ किसे कहते हैं? कि जो विचार आते हैं न, वे विचार दस-पंद्रह मिनट तक चलते रहते हैं, वही के वही विचार। जैसे मक्खी घूमती है न चारों ओर, वैसे घूमते रहते हैं, उसे ग्रंथि कहते हैं। हमें एक विचार के बाद दूसरा आता है,

तीसरा आता है, जैसे कि किसी शादी (रिसेप्शन समय) में कोई व्यक्ति एक के बाद एक सभी को नमस्ते करते हुए आगे जा रहा हो, उसी तरह हमें एक के बाद एक विचार आते हैं और चले जाते हैं। कोई विचार खड़ा नहीं रहता। इसलिए हमें तीनों काल निरंतर समाधि ही रहती है। वह (ग्रंथि) समाधि नहीं रहने देती। विचार आते हैं वे समाधि को भंग कर देते हैं। वे अंतराय करते हैं।

ज्ञानीपुरुष खुद निर्ग्रथ होते हैं इसलिए जब भी देखो, तब उनका चेहरा एक सा ही दिखता है। और ग्रंथिवाले को तो, वह घर बैठा हो न और हम सभी सत्संगी वहाँ गए हों तो वह यों करके (सिर पर हाथ रखकर) बैठा होता है। अरे भाई, ऐसा क्यों कर रहा हो? तब कहता है, 'किसी विचार में फँस गया हूँ।' कोई ग्रंथि आई, कि उसे पढ़ता रहता है और उसमें खो जाता है। इसीलिए ग्रंथियों को विलय करने को कहा है।

विचार तो आते रहेंगे, विचार ज्ञेय हैं और आप ज्ञाता हो। लेकिन भीतर अगर विचार धक्का मार रहे हों, जैसे कि पानी का जोर ज्यादा हो और आप बीच में उँगली डालो तो तब वह उँगली को हटा देता है, तब आप समझ जाते हो कि अभी जोर ज्यादा है। अतः उतने समय ग्रंथियों को विलय कर दो और फिर जोर कम हो जाएगा तब कोई परेशानी नहीं होगी। आखिर में निर्ग्रथ होना पड़ेगा। निर्ग्रथ हुए बिना चारा नहीं है।

अब तो मोक्ष में जाना है, तो निर्ग्रथ होकर जाना पड़ेगा। निर्ग्रथ यानी जब भीतर की सारी ग्रंथियाँ खत्म हो जाएँ। अब बाहर की ग्रंथियाँ बाकी रही, बाह्य ग्रंथियाँ, और वे भी इस 'चंदूभाई' की रही।

गाँठें विलय होने पर निर्ग्रथ हो सकते हैं

प्रश्नकर्ता : निर्ग्रथ होने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : अपने यहाँ करवाते हैं वैसी सामायिक करना। सामायिक से, जो बहुत बड़ी ग्रंथि होती है, जो बहुत परेशान करती हो, वह विलय हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : यह बड़ी गाँठ है, ऐसा कैसे पता चलता है?

दादाश्री : बड़ी गाँठ तो, बार-बार जिसके विचार आएँ, वही बड़ी गाँठ। इस तरफ नींबू रखे हों और उस तरफ संतरे रखे हों, और फिर उस तरफ प्याज़ रखी हों, इन सभी की गंध आती है। लेकिन जिसकी गंध ज्यादा आए तो समझना कि यहाँ पर वह माल ज्यादा है। यानी भीतर पता चल जाता है। बहुत विचार आएँ, विचार पर विचार, विचार पर विचार आएँ तब आपको समझ जाना है कि ओहो! यह माल ज्यादा है।

विचार के आधार पर पहचानी जाती है गाँठें

किसी को अगर सारा दिन पैसों के ही विचार आया करते हों, पैसों का नुकसान किस प्रकार से न हो, इसी में उपयोग रहता हो और उसका ध्यान वहीं पर रहता हो, तब समझना कि उसमें यह गाँठ बड़ी है। किसी को विषय के ही विचार आया करते हैं, दूसरे नहीं आते। किसी को अहंकार के ही विचार आते हैं, 'ऐसा कर डालूँ और वैसा कर डालूँ, नाम कमाऊँ और कीर्ति पाऊँ,' तो उसकी अहंकार की गाँठ बड़ी है।

अतः उसे ध्यान में रखना है कि यह फर्स्ट, यह सेकन्ड, ऐसी कितनी गाँठें हैं, उन्हें देख लेना है। फिर उन पर रोज़ उपयोग रखना। एक दफा देखें-जाने और प्रतिक्रमण करे, तो उस गाँठ की एक परत जाती है। किसी में ऐसी पाँच सौ-पाँच सौ परतें होती हैं, किसी की सौ परतें होती हैं, किसी की दो सौ परतें होती हैं, किन्तु सभी खत्म हो जाएँगी।

गाँठों को विलय कर देना है। हम खुद 'खुद' (आत्मा) हो जाएँ उसके बाद ऐसी सामायिक हो सकती है।

ज्ञाता-ज्ञेय संबंध से विलय करे सभी गाँठें

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसी सामायिक यथार्थ रूप से किस तरह की जाती है?

दादाश्री : वह तो फिर सामायिक में उस विषय को (सामने) रखकर खुद ध्यान करे तो वह विषय विलय होता जाएगा, खत्म हो जाएगा। जो-जो आपको विलय कर देना हो, वह इस सामायिक से विलीन कर सकते हैं। आपको अगर जीभ का स्वाद बाधक हो, तो वही विषय 'सामायिक' में रखना है और उसे 'देखते' रहना है। सिर्फ देखने से ही ज्ञेय-ज्ञाता संबंध से ही सभी गाँठें विलीन हो जाती है।

अतः अपनी अक्रम की सामायिक अलग प्रकार की है। ये जो सभी गाँठें होती हैं, उन्हें इसमें (सामायिक में) रख देनी है। लोभ हो, क्रोध हो, मान हो, इन सभी गाँठों को रख देनी है। वे ज्ञेय हैं और आप ज्ञाता हो।

यह 'अक्रम ज्ञान' है अर्थात् कर्म को सामायिक से जला देते हैं। क्रमिकमार्ग में तो ग्रंथि को खपाना पड़ता है और अक्रम में जला देनी हैं। ग्रंथि को सामने रखकर (अलग रखकर) उसे देखे, ग्रंथि वह ज्ञेय है और खुद ज्ञाता है।

शुद्धात्मा ज्ञाता-दृष्टा और गाँठ, वह ज्ञेय है। इनको आमने-सामने रख दिया कि उसके असर से ही गाँठें विलीन हो जाती हैं। यह गाँठों को विलय करने का साधन है, बहुत अच्छा साधन है। ज्ञाता-ज्ञेय का संबंध रहा कि विलीन हो जाती है। आत्मा के देखने से हरएक चीज़ें (गाँठें) विलीन हो जाती है। आत्मा जिसे देखे वह चीज़ विलीन हो जाती है, लेकिन पूरे गुंठाणा तक ऐसा करे तब यह काम करता है। बाकी अगर घड़ीभर के लिए देखे और फिर वापस किसी और में चला जाए तो वह काम नहीं करता। गुंठाणा, मुख्य रूप से काम करता है। अड़तालीस मिनट तो बहुत ऊँची चीज़ है। फिर उससे आगे परिणती बदले बिना रहती ही नहीं। परिणती बदलनी ही

चाहिए। अड़तालीस मिनट तक वह परिणती चलती है। दूसरी परिणती उत्पन्न नहीं होती। फिर दूसरी परिणती उत्पन्न होने के बाद फिर वही चलती रहती है। यानी अगर जागृत है, वह फिर से नहीं फँसेगा, अगले अड़तालीस मिनट में।

अड़तालीस मिनट का महत्व क्या है?

प्रश्नकर्ता : सामायिक अड़तालीस मिनट की क्यों रखी है?

दादाश्री : सैंतालीस नहीं, अड़तालीस मिनट। अरे, एक दिन यदि अड़तालीस मिनट रही तो हो गया प्रखर आत्मा, फुल टेस्टेड!

आत्मा में ही रहना, वह है सामायिक। आठ मिनट जिनके मन-वचन-काया बंद हो जाएँ, उसे भगवान ने सामायिक की शुरूआत कहा है और आठ से अड़तालीस मिनट तक ऐसा रहा तो, उसे सामायिक कही। अड़तालीस मिनट से ज़्यादा तो किसी को भी नहीं रह सकता।

प्रश्नकर्ता : सामायिक में आठ मिनट तक मन-वचन-काया बंद रहें, तो इसका अर्थ क्या है?

दादाश्री : ऐसा रहे तो उसे सामायिक कहते हैं। नहीं तो वह सामायिक ही नहीं कहलाती। सात मिनट की सामायिक नहीं कही जाती। जो आठ मिनट से लेकर अड़तालीस मिनट तक की सामायिक कहलाती है। वह सात मिनट की हो तो लाभ नहीं मिलता। आठ मिनट की हो तो लाभ मिलता है।

प्रश्नकर्ता : मन-वचन-काया आठ मिनट के लिए भी यदि बंद रहें, तो उसका क्या अर्थ होता है? बंद यानी क्या?

दादाश्री : बंद यानी बिल्कुल काम नहीं करे, स्थिर हो जाए। ऐसा तो बहुत आगे जाने के बाद होता है। अभी एकदम करने जाओगे तो नहीं होगा। जब यह पूरा पूरण किया हुआ ज़्यादातर गलन हो गया हो तब, थोड़ा ही गलन बाकी बचा हो तब ऐसा हो सकता है।

वैज्ञानिक गिनती, एक गुंठाणा की

प्रश्नकर्ता : ऐसा आठ मिनट ही क्यों? सात नहीं, नौ नहीं?

दादाश्री : नियम है, कुदरती नियम। नेचर का नियम, यह नैचरल चीज़ है न?

प्रश्नकर्ता : यानी इसके पीछे क्या कोई रहस्य है?

दादाश्री : रहस्य तो है ही न। एक चम्मच चाटना और एक लोटा पीना, इन दोनों में फर्क नहीं है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, सही है। यानी सब प्रोपर (योग्य) मात्रा में होना चाहिए। इसलिए आठ मिनट की मात्रा सही है?

दादाश्री : हाँ, मात्रा।

प्रश्नकर्ता : और यदि एक घंटे से ज्यादा हुआ तो ओवरडोज़ (अधिकमात्रा) हो जाएगा।

दादाश्री : हाँ, वह बेकार ही चला जाएगा।

यह अड़तालीस मिनट की सामायिक, यानी क्या है कि फिर चित्त की स्टेज बदलती है। आठ मिनट से लेकर अड़तालीस मिनट तक चित्त बंद जाता है। आठ मिनट से चित्त बंधने लगता है। जैसे कि दूध में से आइस्क्रीम बन रही हो तो पहले दूध बंद जाता है, उसके बाद आइस्क्रीम बननी शुरू हो जाती है और फिर ठंडी होकर आइस्क्रीम बन जाती है।

ज़रूरत है स्थिरता की, स्थिति की नहीं

एक व्यक्ति कह रहा था, 'दादा, आप हमें पद्मासन में बैठने को क्यों नहीं कहते? पद्मासन में बैठकर सामायिक करने में क्या हर्ज है?' तब मैंने कहा, 'सामायिक के लिए पद्मासन में बैठने को कहें तो आपमें से कुछ तो पद्मासन खोल सकोगे, लेकिन फिर कितनों के तो पद्मासन खोलने पड़ेंगे! उन्हें यों उठाकर फिर

खोलने पड़ेंगे! क्या जानते हो कि आजकल बहुत लोगों के पैर वैसे ही हो गए हैं। बोलो अब, क्या ऐसे समय में पद्मासन लगाने को कहें? हाँ, बेकार ही झंझट! वैसे भी निरी झंझटे ही हैं, तो इस पर एक और झंझट क्यों बढ़ाना? उसे सीधी तरह बैठने दो न! शांति से कभी बैठने ही नहीं दिया!'

इसलिए मैंने कहा, 'इस काल में पद्मासन मत लगाना। वर्ना पैर मरडवा (मरोड़ना) जाना पड़ेगा किन्तु हाँ, लेकिन स्थिर होकर बैठना और यदि स्थिर होकर नहीं बैठा जाए तो लेटे-लेटे करना। आँखें बंद करके करना। आँखें खुली रखकर सामायिक सिर्फ ज्ञानीपुरुष ही कर सकते हैं, अन्य लोगों का काम ही नहीं है।'

अपने यहाँ तो कोई कैसे भी बैठे फिर भी उसे कोई कहनेवाला नहीं है। क्योंकि, बेचारे आज के जीव, मूलतः तो ये ईज़ीनेस (सरल, आसान) ढूँढ रहे हैं और अगर हम अनईज़ी (मुश्किल) कर दें, तो क्या होगा? आराम से बैठें, तो ज़रा ईज़ी (आसानी से) रहा जा सकेगा! और वहाँ अगर उन्हें नियम दिखाए तो वह बैठेगा ही नहीं। इसलिए मैंने नियम नहीं बनाए हैं! हमें तो काम से काम है न!

खुद ज्ञाता, आदतों और स्वभाव का

आत्मा का स्वभाव मोक्षगामी है, ज्ञाता-दृष्टा है। हम क्या कहते हैं कि, 'शुद्ध चेतन' 'मन-वचन-काया' की आदतों और उनके स्वभाव को जानता है और 'शुद्ध चेतन' खुद के स्वभाव को भी जानता है। क्योंकि वह स्व-पर प्रकाशक है।'

स्वरूप ज्ञान के बाद हम अपने स्वभाव को जानते हैं और इन मन-वचन-काया की आदतों को भी जानते हैं। मन ऐसा है, वाणी की आदत ऐसी है, सामनेवाले को अप्रिय लगे ऐसी है, भाषा खराब है, यह सब आप जानते हो या नहीं जानते? आप यह भी जानते हो और 'वह' भी जानते हो। क्योंकि आप स्व-पर प्रकाशक हो। खुद को, 'स्व' को भी प्रकाशित कर सकते हो और 'पर' को भी प्रकाशित कर सकते

हो। अज्ञानी व्यक्ति, सिर्फ 'पर' को ही प्रकाशित कर सकता है, 'स्व' को प्रकाशित नहीं कर सकता। उन्हें ऐसा लगता तो है कि 'मेरा मन बहुत खराब है,' लेकिन फिर जाए कहाँ? वहीं के वहीं ही रहना पड़ता है, जबकि आत्मज्ञानवाला तो उससे जुदा रह पाता है।

आदतों का स्वभाव रस विलय हों सामायिक में

प्रश्नकर्ता : 'आदतें और उनका स्वभाव' यह समझ में नहीं आया।

दादाश्री : सिर्फ मन-वचन-काया की आदत ही नहीं कहा है, साथ ही उनका स्वभाव भी कहा है। स्वभाव यानी कोई-कोई आदत बहुत मोटी होती है, कोई आदत है तो बिल्कुल पतली होती है, नाखून जितनी ही पतली होती है, जो एक या दो बार प्रतिक्रमण करने से खत्म हो जाती है। और जो आदत बहुत मोटी होती है उसके तो बहुत प्रतिक्रमण करें, छीलते रहें, तब वह घिस जाती है।

पतले रस से बंधी गई आदतें तो दो-पाँच बार प्रतिक्रमण करोगे तो वे उड़ जाएगी, लेकिन गाढ़े रसवाली आदतों के पाँचसौ-पाँचसौ बार प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। कई गाँठें, लोभ की गाँठ तो इतनी बड़ी होती है कि रोज़ दो-दो, तीन-तीन घंटे लोभ के प्रतिक्रमण करते रहें, तो भी छः सालों तक खत्म नहीं होती है और किसी की लोभ की गाँठ ऐसी होती है कि एक दिन में या फिर तीन घंटों में ही खत्म हो जाती है! ऐसे भाँत-भाँत के स्वभाव रस होते हैं।

ये मन-वचन-काया की आदतें जो हैं वे तो ऐसी हैं कि मरने पर छूटें, किन्तु उनका जो स्वभाव है, उस स्वभाव को तुम विलय कर दो। सामनेवाला पूछे कि वह कैसे विलय होगा? तब मैं कहूँ, उसे देखने से कि मन-वचन-काया का स्वभाव इतना गाढ़ है, इतना गाढ़ है। वह तुम्हें पता चलता है न कि यह इतना गाढ़ है?

प्रश्नकर्ता : पता चलता है।

दादाश्री : मतलब स्वभाव को सामायिक में रख देना, तो उसका उतना स्वभाव विलीन होकर खत्म हो जाएगा। फिर दूसरे स्वभाव को सामायिक में लेना।

यह जो सामायिक करते हैं न, उस घड़ी स्वभाव को उसमें रखें तो वह सब विलीन हो जाएगा। उस स्वभाव का ज्ञाता-दृष्टा रहा तो वह विलय होने लगता है।

अपना तो अक्रममार्ग है। अर्थात् स्वभाव विलीन करने के लिए आपको यह सामायिक करनी है। नहीं तो यह ज्ञान ही ऐसा है कि आपकी तो पूरे दिन सामायिक ही हो रही है।

आत्मा का रसास्वाद प्राप्त होता है सामायिक में

जिस-जिस स्वभाव को विलीन करना है, उसे सामायिक में रखते जाना। उसे जानने से वह स्वभाव विलीन होता जाता है। और दूसरा क्या लाभ मिलता है, कि आत्मा का रसास्वाद चखते हैं! आत्मा स्थिर है, अचल है और देह को भी अगर अचल किया तो स्वाद उत्पन्न होगा! यदि बाहर अचल किया तो भीतर अचलता का स्वाद आता है।

आप आत्मस्वरूप होकर सामायिक करो तो आत्मा का स्वाभाविक सुख उत्पन्न होता है और दूसरा यह कि खुद के जो दोष हैं, उन्हें ज्ञाता-दृष्टा के तौर पर देखते रहने से दोष विलीन होते रहते हैं। यानी दो लाभ होते हैं।

इसीलिए तो वे (क्रमिमार्ग के) लोग सामायिक करते हैं। जब कायोत्सर्ग करते हैं न तब भीतर से स्वाद आता है, इससे वे जान सकते हैं कि बाहर इन्द्रियों का सुख नहीं है, सुख अंदर है। और आप तो, सुख अंदर है ऐसा जान गए हो, तो अब यह सामायिक किसलिए करनी है? यह स्वाद चखने के लिए। आत्मरस भोगने के लिए आपको सामायिक करनी है और उन लोगों को तो आत्मरस का भान होने के लिए करनी है।

कषायों का अभाव, वही है सच्ची सामायिक

सामायिक किसे कही जाती है कि कषाय का अभाव। कषाय के अभाव को सही सामायिक कही जाती है। किन्तु कषाय का अभाव तो लोगों को रहता नहीं न! कैसे रहेगा?

और हम सबको तो हमेशा, पूरे दिन सामायिक रहती है। लेकिन फिर भी यह (बैठकर) सामायिक तो किसलिए करनी पड़ती है कि यह सारा भरा हुआ माल खाली करना है। बहुत सारा माल है। मसाला इतना सारा भरकर लाए हैं, दूसरे मार्केट से भी भरकर ले आए हैं। अरे, अपने देशी मार्केट से लो न? तब कहे, 'नहीं, यह तो आलू जैसा लगता है।' ऐसा कर-करके ये सब तरह-तरह का भर लाए हैं। कभी किसी को बताते हुए भी शर्म आ जाए!

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा। किन्तु इसका उपाय क्या है?

दादाश्री : प्रतिक्रमण। प्रतिक्रमण करने से वे कर्म खत्म हो जाएँगे। प्रतिक्रमण तो दोषों में से मुक्त होने के लिए सबसे बड़ा हथियार है।

सामायिक-प्रतिक्रमण से निजरी दोष

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने से पहले जो सभी दोष हुए हों, उन सभी दोषों का प्रतिक्रमण किस तरह किया जा सकता है?

दादाश्री : वे दोष कुछ गाढ़ हैं न, इसलिए उसकी प्रकृति में आते रहते हैं। उससे पता चल जाता है कि ये पहले से हैं। अर्थात् उस दोष के ज्यादा प्रतिक्रमण करने हैं।

प्रश्नकर्ता : सामायिक से वे ज्यादा पहचाने जा सकते हैं न?

दादाश्री : हाँ, सामायिक से तो सभी (दोष) पहचाने जा सकते हैं। लेकिन अगर अंदर से ये दोष आएँ न, तो इसका मतलब पहले से ही वह प्रकृति

का गुण है, अर्थात् पहले भी ये दोष थे, इसलिए उनके ज्यादा प्रतिक्रमण करना। और कितने ही दोष जो नहीं हैं, उनके लिए कुछ नहीं करना है।

विविध दोषों को धोने की सामायिक

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहा है कि अलग-अलग प्रकार से सामायिक करनी चाहिए, सामायिक के वे प्रकार कौन-कौन से हैं?

दादाश्री : हाँ, वह तो अनेक प्रकार यानी ये सभी पाँच प्रकार के दोष हैं। बचपन से लेकर आज तक जिन-जिनके साथ जो-जो दोष हुए हों, हिंसा संबंधी दोष किन्हीं जीवों के साथ हुए हों, किसी को दुःख दिया हो, किसी को कुछ भला-बुरा कहा हो, किसी के साथ कषाय किए हों, बचपन में बिल्ली को मारा हो, किसी बंदर को मारा हो, ऐसे हिंसा संबंधी दोष।

बचपन में जिनके भी साथ झगड़े हुए हो, कहा-सुनी की हो, मारपीट हुई हो, वे सारे हिसाब चुका दो। रिश्तेदारों और पड़ोसियों के साथ ऐसा बहुत दोष किए होते हैं। किसी को मारकर आया हो और किसी को धक्का दिया हो, कुछ करने में बाकी नहीं रखा है।

किसी को मारा हो, यदि भाव बिगड़ गए हों, क्रोध किया हो, और कुछ ऐसा किया हो, तो वह सब तो भीतर देख सकते हैं। ये सारे पहले के पर्याय भीतर देख सकते हैं, किन्तु अगर सामायिक ज्यादा करे तो। पहली बार सामायिक करे तो ये सब एकदम से नहीं दिखता, लेकिन पाँच-दस-पंद्रह सामायिक होने के बाद सूक्ष्मता आती है।

प्रश्नकर्ता : दादा, यह तो बहुत बड़ी चीज़ है। ऐसा ध्येय नक्की हो जाता है कि 'मेरे मन-वचन-काया से किसी को किंचित् मात्र दुःख न हो।' यह ध्येय फिर हमेशा हमें लक्ष्य में रखना है!

दादाश्री : मन-वचन-काया से जो-जो हिंसाएँ हुई हैं, उन सभी को देखने का ध्येय नक्की करना तो

फिर दिखाई देंगी आपको। हमें देखना ही है, जानना ही है ऐसा नक्की करोगे तो भीतर क्या-क्या, कौन-कौन से दोष हुए हैं, वह दिखेगा आपको। और इसमें (आपको) ज्ञाता-दृष्टा रहना है, इतना ही।

मतलब कि इतना करना। सब याद कर-करके करना। ऐसा करने से हिंसा के परमाणु छूटकर अपने आप घर चले जाएँगे और आपका बोझ कम हो जाएगा एकदम। इस प्रकार रोज़ करोगे तो हिंसा के परमाणु छूट जाएँगे।

चोरी संबंधित सामायिक

फिर एक दिन चोरी की सामायिक करना। बचपन में जो चोरी की हो, चोरी यानी सिर्फ पैसों की नहीं, मन से चोरी की हो, और कोई चोरी की हो आज तक, वह सब भीतर दिखाई देगा। और सारा घाटा ही चला जाएगा।

उन चोरियों के सभी दोषों का आपको पता चलता जाएगा, कि बचपन में ये किया था, वो किया था, उसके साथ ऐसा किया था, वैसा किया था। इस तरह सब दिखाई देगा। और यह सब धोना तो पड़ेगा न? अब तक चाहे जो भी स्टॉक भर लिया, लेकिन यदि उसे धो दिया तो मन चोखा रहेगा। बोझ किस चीज़ का? इन सबसे आप हल्के हो जाओगे न तब अच्छा रहेगा।

परिग्रह की सामायिक

उसके बाद परिग्रह की सामायिक। गैरज़रूरी चीज़ों को इकट्ठे करते रहे। दो कमीज़ हों फिर भी दूसरी दस सिलवाए, इस प्रकार परिग्रह की सामायिक करनी है।

इन चीज़ों में ममता उसे क्या कहते हैं? परिग्रह कहते हैं। ऐसे जो-जो दोष किए हों, उन दोषों को याद करके और भगवान महावीर की साक्षी में अथवा 'श्री सीमंधर स्वामी को नमस्कार करता हूँ' ऐसा कहकर माँफ़ी माँगना। इतना करना, इतना हो पाएगा?

प्रश्नकर्ता : होगा। जितने याद आएँगे उन सभी के कर लेंगे।

दादाश्री : जब तक याद आए उतने समय तक यह सब करना। जिनकी ऐसी इच्छा है, जो सरल हैं, उन्हें याद आए बिना रहेगा नहीं। और भगवान के मार्ग में सरलता वह मोक्ष का सरल रास्ता, उच्च रास्ता। अगर सरल नहीं हुए, तो भगवान के मार्ग में है ही नहीं।

झूठ-असत्य से संबंधित सामायिक

प्रश्नकर्ता : झूठ की बाकी रही। झूठ, असत्य।

दादाश्री : झूठ की तो बहुत लंबी सामायिक होगी। इस सामायिक को लेट गो करते हैं। क्योंकि इसके कितने ही दोष तो उस चोरी और हिंसा के सामायिक में चले जाते हैं। साधारण ही झूठ बोले उसका कोई अर्थ नहीं है।

प्रश्नकर्ता : वे सारे दोष माफ़?

दादाश्री : माफ़ नहीं। वे उतने याद ही नहीं आएँगे न? दिखेंगे ही नहीं न! कितने सारे, यों चलते-फिरते झूठ बोला होता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन फिर उसका क्या करना? झूठ बोला गया हो उसका भी जनरल प्रतिक्रमण तो करना पड़ेगा न?

दादाश्री : सही मानों में झूठ किसे कहते हैं? किसी का नुकसान करना, वह झूठ कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा किसी का नुकसान करने का इरादा नहीं हो तो?

दादाश्री : हाँ, यह तो खुद का अपमान नहीं हो, उसके लिए झूठ बोलता है। अपमान की रक्षा के लिए झूठ बोलता है। तो इस काल में तो, ये सब गिनने में आएगा न! झूठ बोलकर किसी का नुकसान करे तब (प्रतिक्रमण) करना।

प्रश्नकर्ता : इरादा वैसा होना चाहिए।

दादावाणी

दादाश्री : आप कहो कि यह टेबल इनका है। आप जानते हो कि उनका है फिर भी आप कहो 'इनका है' तो उसे झूठ कहते हैं, किसी को नुकसान पहुँचानेवाला। झूठ यदि खुद को नुकसान पहुँचाए तो उसमें हर्ज नहीं है। स्त्रियाँ बात-बात में, रोज़ डेढ़ सौ बार झूठ बोलती होंगी और वे भोली होती हैं, उन्हें पता ही नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : ऐसा तो सभी करते हैं न दादा? स्त्रियाँ करती हैं, पुरुष भी करते हैं।

दादाश्री : अतः झूठ के लिए हम ज्यादा माथापच्ची नहीं करते। अभी एक-दो जन्म और लेने हैं न? इसलिए माथापच्ची नहीं करते। चोरी के लिए माथापच्ची करते हैं, विषय के लिए माथापच्ची करते हैं, परिग्रह के लिए माथापच्ची करते हैं।

अतः सामायिक के इतने प्रकार दिखाए। इतने प्रकार की सामायिक (और प्रतिक्रमण) करनी चाहिए।

लाभ उठा लो, सामायिक-प्रतिक्रमण से

इस काल में अभी भी कुछ समझने जैसा है। अब काल ऐसा आ रहा है कि लगभग दो-तीन हजार वर्षों तक सब अच्छा चलेगा। बहुत ऊँची स्थिति आएगी। भगवान महावीर के समय जैसी स्थिति आएगी, इसलिए उस अरसे में लाभ उठा लो तो काम का है। अब नए सिरे से परिणति बदल देनी है कि अब तो ज्ञानी के लिए ही जीना है। बाकी सब तो हिसाब है और उसके अनुसार मिलते रहनेवाले हैं, आपको अपना कार्य करते जाना है। उसका फल तो मिलता ही रहेगा। अन्य सभी भाव, अन्य सभी परिणति बदल लेने जैसी हैं। बाकी, क्या यह सब साथ ले जानेवाले हो?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : अतः यह सब जो-जो किया है उन सबका पछतावा करो। और साथ ही साथ ऐसा भी करना कि 'ज्ञानीपुरुष के होने के बावजूद भी हमने

ऐसी शंका की और ज्ञानीपुरुष कैसे होते हैं यह सब पूछा, यह भी हमारा दोष है।' ऐसा भी (प्रतिक्रमण) करना।

यह तो अवश्य ही करना

फिर यह चरणविधि दिन में दो-दो बार बोलनी चाहिए। चरणविधि, उसे पढ़कर बोलना। जैसे आप विधि बोलते हो न धीरे-धीरे, वैसे।

प्रश्नकर्ता : चित्त संपूर्ण उसमें ही रहे।

दादाश्री : हाँ। वर्ना वह मन का उपयोग कहलाएगा। मन की सामायिक कहलाएगी अगर यों ही बोल दें तो।

प्रश्नकर्ता : यदि तब चित्त बाहर भटके तो?

दादाश्री : इसलिए एक-एक अक्षर को देखकर जाने देना। यह एक-एक अक्षर पढ़कर फिर जाना चाहिए। यदि पुस्तक में से पढ़ो तो भी वह मन की सामायिक है। लेकिन यदि इस तरह पढ़ो तो वह आत्मा की सामायिक है। जो आप सबको सिखाया है। वह तो दो बार करनी चाहिए। वे भावनाएँ (नौ कलमें) चार-पाँच बार करनी चाहिए। त्रिमंत्र बोलते रहना चाहिए। ये सारे साधन दिए ही हैं।

और अगर ब्रह्मचर्य का पालन करना हो...

फिर अगर शादी नहीं करनी हो तो उसके लिए सामायिक करनी चाहिए। शादी करनी हो तो वैसी सामायिक करना। जिसे शादी नहीं करनी हो उसे वैसी सामायिक कैसे करनी चाहिए? कि शादी करने से कैसे-कैसे सुख आते हैं, कैसे-कैसे दुःख आते हैं, यह सब देखना है। और शादी करने की सामायिक किस तरह करनी है, कि शादी करने से क्या-क्या सुख मिलते हैं, क्या-क्या (दुःख) होते हैं, क्या फायदा है, यह सब देखना। तुम कौन सी सामायिक करोगे?

प्रश्नकर्ता : शादी न करने का।

दादाश्री : अच्छा! शादी नहीं करने की

दादावाणी

सामायिक यानी हम क्या कहना चाहते हैं कि शादी नहीं करने में क्या-क्या फायदे हैं और क्या नुकसान है, इन सबका ठीक से विवरण करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : और शादी करने में?

दादाश्री : शादी करने में क्या-क्या फायदे हैं!

प्रश्नकर्ता : मतलब नुकसान नहीं?

दादाश्री : नुकसान तो उसके अंदर आ ही गया न!

प्रश्नकर्ता : तब तो एक ही हुआ न, दादा। तो सब वही हुआ न?

दादाश्री : नहीं, वह उसमें शादी करनेवाली दृष्टि होती है और इसमें शादी नहीं करनेवाली दृष्टि है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दृष्टि में फर्क रहेगा।

दादाश्री : दृष्टि में फर्क यानी, इस पक्षवाले को यों (दुःख) बहुत दिखाई देंगे और उस पक्षवाले को उसमें सुख ही है ऐसा दिखेगा, सुख का बचाव करेगा। और यह जो है, वह शादी नहीं करने का बचाव करेगा। वकील बनता है न खुद अपना ही?

प्रश्नकर्ता : हाँ, यह बात सही है।

दादाश्री : वकील बन जाता है। जिसे विषय के विचार अच्छे नहीं लगते हों और उनसे छूटना हो, वह इस सामायिक से, शुद्ध उपयोग से, उन्हें विलय कर सकता है। इस 'ज्ञान' के बाद जिसे जल्दी हल लाना हो उसे ऐसा करना चाहिए। कहीं सभी को इसकी ज़रूरत नहीं है।

विषय से संबंधित दोषों की सामायिक

इस काल में विषय की गाँठ बड़ी है उसके निकाल की बहुत ही ज्यादा ज़रूरत है, तो कुदरती तौर पर ही, अपने यहाँ यह सामायिक (का उपाय) है। सामायिक करो, सामायिक से सब विलय हो जाता है। कुछ करना तो पड़ेगा न? सारा रोग निकाल देना

पड़ेगा न? एकाध गाँठ ही भारी होती है, लेकिन जो भी रोग है तो वह निकालना तो पड़ेगा न? उस रोग से ही अनंत जन्मों तक भटके हैं न? ये सामायिक तो किस हेतु से हैं कि अभी तक विषय भाव का बीज खत्म नहीं हुआ है और उस बीज में से ही चार्ज होता है उस विषय भाव के बीज को खत्म करने के लिए यह सामायिक है।

(इस सामायिक में) अभी भी पछतावा करोगे तो इस देह में ही पापों को भस्मीभूत कर पाओगे। (इन सभी दोषों के) पछतावे की ही सामायिक करो। कैसा पछतावा? तब कहे, 'ऐसे व्यभिचार किए, फलाँ किया, जिस पर दृष्टि बिगाड़ी हो उसका नाम लेकर, उसका चेहरा याद करके, उन सभी पापों को धोने लगे, अभी भी धो सकते हो।'

प्रश्नकर्ता : दादा, आपके अमरीका जाने से पहले आपकी उपस्थिति में क्या हम सब एकबार प्रतिक्रमण करें?

दादाश्री : हाँ, आज शाम को ही करवाते हैं। मेरी हाज़िरी में ही करते हैं। मैं वहाँ बैटूँगा और मेरी हाज़िरी में आप सब करना। यह प्रतिक्रमण तो एकबार करवाया था, मेरी हाज़िरी में ही करवाया था और मैंने खुद ही करवाया था।

एकबार विधि करवाकर सबको बिठाया था, मुंबई में। विषय के बारे में बात की थी कि अभी भी आपको शरीर भारी क्यों लगता है, अब भी लाभ क्यों नहीं होता? तब कहे, पिछले जो विषय दोष हुए हैं उनके परिणाम परमाणु अंदर हैं। अभी तक परिणमित नहीं हुए हैं, ऐसे परमाणु अंदर हैं। परिणमित होने बाकी हैं, वे भीतर खटकते रहते हैं। इसलिए मैंने विषय के बारे में ऐसा रखा है।

सामायिक, प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान सहित

प्रश्नकर्ता : विषय-विकार से संबंधित सामायिक-प्रतिक्रमण किस तरह करने हैं?

दादावाणी

दादाश्री : विषय से संबंधित सामायिक में, अब से लेकर छोटी उम्र के थे, तब तक जहाँ-जहाँ विषय दोष हुए हों, विषय भोग किए हों, जिनके साथ ये दोष हुए हों, इस प्रकार उन सभी दोषों को एक-एक करके पकड़ो और भीतर उनके प्रतिक्रमण करते जाओ। जिसके भी साथ आप विषय के निमित्त बने हैं, उन सभी के प्रतिक्रमण करते-करते आगे बढ़ो। भीतर अंदर गहराई में उतरो। बचपन से लेकर आज तक जिस-जिस प्रकार के दोष हुए हैं भीतर उन्हें देखो।

खुद की पत्नी या खुद के पति के अलावा अन्य जिन-जिन के लिए विषय के विचार आए हों, दृष्टि से भूलें हुई हों, विचार से भूलें हुई हों, छेड़खानी की भूलें हुई हों, आज तक तरह-तरह की जो भी सब भूलें हुई हों उनके प्रतिक्रमण करने हैं और भविष्य में फिर से ऐसी भूल नहीं हो, ऐसा निश्चय करना है।

अब तक वे दोष दिखे ही नहीं थे। अब शुरूआत करना, कि इस उम्र से लेकर बचपन तक यों देखते-देखते जा पाओगे। अभी इस साल में कौन से दोष हुए, पिछले साल कौन से हुए, उसके पहले कौन से हुए, इस प्रकार देखते-देखते भीतर गहराई में जा सकोगे। इस प्रकार उसमें स्थिरता रहेगी। 'आप' ज्ञाता-दृष्टा हो इसलिए आपको सिर्फ देखते रहना है, और कुछ नहीं करना है। अपने आप ही आत्मा गहराई में उतरेगा। आपको भीतर दखल नहीं करनी है। 'होगा या नहीं होगा' ऐसे सब संकल्प-विकल्प नहीं करने हैं। वह तो अंदर गहराई में उतरकर खोज ने से सारे दोष मिल जाएँगे।

ज्ञेय-ज्ञाता संबंध से हो सकती है दोषों से मुक्ति

आपको इतनी भावना करनी है कि 'मुझे विषय के संबंध में चंदूलाल (फाइल नं:१) के सूक्ष्म दोष देखने हैं' तब फिर दिखने की शुरूआत हो जाएगी। आपको भीतर दोष दिखाई देंगे। वे दिखे तो चले जाएँगे। किन्तु दिखाई देने चाहिए। जो दिखाई

पड़ते हैं वे ज्ञेय हैं, और आप ज्ञाता हो अब तक तो कर्म बंधे हुए थे और वे ज्ञेय रूप नहीं हुए थे, इस कारण वे पड़े हुए थे। अब (ज्ञान मिलने के बाद) वे ज्ञेय स्वरूप हो गए इसलिए आप उनसे मुक्त हो गए। नए तो आपके लिए ज्ञेय ही हैं, लेकिन पहले के जो बंद चुके हैं उन्हें ज्ञेय स्वरूप कर दिया तो मुक्त हो सकते हैं। अर्थात् ज्ञेय वह ज्ञेय और आप ज्ञाता बन गए कि छूट गया सब, इतना ही कहना चाहते हैं।

यह तो काम निकाल दे ऐसी चीज़ है। हमारी हाज़िरी में, हम विधि पर विधि करते रहें और आप सामायिक करते रहो, तो भीतर आपको रक्षण रहेगा और अभी यहाँ शुरूआत भी हो जाएगी। फिर चाहे आप अपने घर पर करो तो भी शुरू हो जाएगा। एकबार आप भीतर उखाड़ने लगो तो अंदर सबकुछ है, वर्ना तो वे तो निकलती नहीं न भीतर की चीज़ें! फिर अगर बंद पड़ गया तो वह नहीं उखड़ेगा। इसलिए यही (सामायिक) करते रहना, विषय के बारे में। ब्रह्मचर्य के लिए करोगे तो अब्रह्मचर्य के परमाणु छूट जाएँगे। भीतर सारा सामान भरा पड़ा है परमाणुओं का। ये भीतर जो स्टॉक में पड़े हुए हैं न, वे सारे खाली करने पड़ेंगे, नहीं तो उनके आधार पर अगला जन्म बंधन करवाते हैं वे।

इस काल में तो विषय का जोर ही ज्यादा है। विषय संबंधित निर्दोषता होना बहुत बड़ी बात है। दुःख विषय के कारण ही है।

प्रश्नकर्ता : परिग्रह भी कहाँ कम है?

दादाश्री : परिग्रह? परिग्रह का अभी पता नहीं चलेगा। वह तो, परिग्रह इतना अधिक है कि 'परिग्रही हूँ' ऐसा उसे खुद पता नहीं होता। इसलिए, पहले विषय का (सामायिक) होने दो न, सारे रोग विषय के ही हैं। सबकुछ विषय की वजह से ही खड़ा है। यह परिग्रह भी विषय की वजह से ही खड़ा है। विषय नहीं होगा तो यह कुछ भी नहीं रहेगा।

बदलो अभिप्राय सामायिक से

दुनिया में सिर्फ यह विषय ही एक ऐसी चीज़ है जो बंधन का कारण है। पूरा जगत् इसी में से उत्पन्न हुआ है और इसी से सबकुछ खड़ा हो गया है। इसलिए अब इसके प्रति अभिप्राय ही ऐसा बदल देना चाहिए ताकि उसके प्रति कोई दूसरा अभिप्राय रहे ही नहीं। रोज़-रोज़ अभिप्राय बदलना चाहिए सामायिक करके, प्रतिक्रमण करके।

यह तो आत्मा की सामायिक है, भीतर आत्मा ही काम कर रहा है। तभी तो लोगों को ठेठ तक का दिखाई देता है, सारे दोष दिखाई देते हैं। अभी तो यह पहली बार है इसलिए धीरे-धीरे वे सभी दोष दिखाई देंगे। जितने दिखाई दिए उतने धुल जाते हैं। फिर हल्के हो जाते हैं।

विधि, प्रतिक्रमण-सामायिक की

प्रश्नकर्ता : अब सामायिक करवाइए दादा।

दादाश्री : हाँ, एक घंटे की सामायिक आपको विषय संबंधी (दोषों की) गहराई में उतरना है। सभी उतर पाएँगे। चलिए, अब बुलवाइए।

नीरूबहन : हे दादा भगवान, हे श्री सीमंधर स्वामी प्रभु, मुझे शुद्ध उपयोग पूर्वक, पूरी जिंदगी में हुए विषय संबंधी दोषों को देखने की शक्ति दीजिए। मुझे विषय संबंधी दोषों की सामायिक-प्रतिक्रमण करने की शक्ति दीजिए।

मैं मन-वचन-काया, मेरे नाम की सर्व माया, भावकर्म-द्रव्यकर्म-नोकर्म आप प्रकट परमात्मा स्वरूप प्रभु के सुचरणों में समर्पित करता हूँ।

दादाश्री : मैं शुद्धात्मा हूँ। (५)

मैं विशुद्धात्मा हूँ।

मैं परम ज्योति स्वरूप सिद्ध भगवान हूँ।

मैं मन-वचन-काया से बिल्कुल भिन्न ऐसा शुद्ध आत्मा हूँ।

मैं भावकर्म से मुक्त ऐसा शुद्धात्मा हूँ।

मैं द्रव्यकर्म से मुक्त ऐसा शुद्धात्मा हूँ।

मैं नोकर्म से मुक्त ऐसा शुद्धात्मा हूँ।

मैं अनंत ज्ञानवाला हूँ। (५)

मैं अनंत दर्शनवाला हूँ। (५)

मैं अनंत शक्तिवाला हूँ। (५)

मैं अनंत सुख का धाम हूँ। (५)

मैं शुद्धात्मा हूँ। (५)

अब अंदर गहराई में उतरने लगे। आँखें बंद करके आप यह शुरू कर दो। हमें यह सामायिक-प्रतिक्रमण क्यों करने हैं? कि संसार से मुक्ति और भीतर प्रतिक्रमण। ऐसा यह सामायिक-प्रतिक्रमण है। प्रतिक्रमण अर्थात् भीतर, मोक्ष के लिए बाधक हो वैसा जो-जो किया हो, उनका छेदन करना।

इससे (सामायिक से) बहुत लाभ होता है, बहुत लाभ। इससे सब दोष मिट जाता है। मन अच्छा रहता है, शरीर अच्छा रहता है। कचरा निकल जाता है! ऐसा अगर एक-दो महीनों के लिए हो जाए तो काम बन जाए। सबके साथ बैठने से, वातावरण के असर से बहुत काम बन जाता है।

आनंद बर्ते, सामायिक के बाद

प्रश्नकर्ता : सामायिक का अर्थ समझते नहीं थे किन्तु इस प्रयोग से बहुत ही आनंद के साथ समाधि जैसा भाव हुआ।

दादाश्री : हाँ, बस वह तो अपने आप समाधि हो जाती है।

यह जो आपने सामायिक में देखा न, इसे भगवान ने कायोत्सर्ग कहा है। इन दादा ने अक्रम विज्ञान द्वारा कायोत्सर्ग से भी उच्च ज्ञान दिया है आपको, लेकिन अब अगर करो तो आपका। यदि नहीं करो तो मैं क्या करूँ? इसमें कोई पैसे खर्च नहीं होते। उल्टा, मन को शांति मिलेगी, आनंद होगा और आत्मा प्रत्यक्ष प्रकट होगा। शुद्धात्मा प्रकट करने का रास्ता ही यह है।

आपको जितना करना हो उतना हो सके ऐसा है और कितने ही महात्मा यह करते भी हैं। पुरुषार्थ है, किन्तु यह सभी लोगों को आता नहीं है। अपने यहाँ यह जो सामायिक करवाते हैं न, वह बहुत उच्च प्रकार का पुरुषार्थ है।

दिखते हैं दोष सामायिक में, आत्म शक्ति से

तुझे कुछ दिखाई दिया (सामायिक में)?

प्रश्नकर्ता : दिखाई दिया दादा, बहुत से दोष दिखाई दिए। एकदम ही यों अलगपन दिखा और चंदू ने जो सब कारस्तानी की है, वे सभी यों फरटि से दिखता ही रहा, दिखता ही रहा!

दादाश्री : इस प्रकार आत्मा का स्पष्टवेदन। यही स्पष्ट आत्मा, जो सूक्ष्म दोष, स्थूल दोषों को देखता है। और वे दोष आज नहीं हुए हैं, जो पहले हुए थे। जैसे थे, जिस तरह हुए थे ठीक उसी तरह दिखाई देते हैं।

प्रश्नकर्ता : स्थल, जगह, रास्ता सबकुछ दिखता है...

दादाश्री : हाँ। वह सब देखनेवाला कौन? वह देखनेवाला, आत्मा है। आत्मा के सिवा और कोई नहीं देख सकता यह सब। और कोई देख नहीं सकता यह। बहुत हुआ तो बड़ी-बड़ी बातों को याद कर सकता है। यानी कि जो स्थूल चीजें हैं। ऐसा किसी को दिखाई ही नहीं देगा न। क्योंकि अहंकार, बुद्धि वह सब नहीं देख सकते। वहाँ पर याददाश्त होती ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : किन्तु दादा, उस समय अहंकार की क्या पोज़िशन (स्थिति) होती है?

दादाश्री : अहंकार तो वहाँ पर खड़ा ही नहीं रहता, कहेगा कि यह रिज़र्वेशन (स्थान) अपना नहीं है। वह तो कहीं का कहीं भाग जाता है। यदि वह हो तो दोष दिखाई नहीं देते। अंतःकरण मात्र खिसक जाता है, तब उसमें दखल ही नहीं करता। हम इसीलिए पहले विधि बुलवाते हैं, विधि बुलवाने से लिंक शुरू हो जाती है।

क्योंकि मन का स्वभाव, देखने का नहीं है। आप मनसे कहो कि 'तुम भीतर जाकर देखो, बचपन से तुमने क्या-क्या किया है।' तब वह कहेगा, 'मुझ में देखने का स्वभाव ही नहीं है।' अतः याददाश्त तो जड़ शक्ति है। इसलिए थोड़े दिनों तक थोड़ा बहुत याद आ जाता है, मोटी बातें, बाकी कुछ याद नहीं आता। बुद्धि से कहें कि 'तुम जाकर देखो'। तो बुद्धि लंबा देख ही नहीं सकती। फायदा-नुकसान ही देखती है, और कुछ नहीं देखती। और अहंकार तो मुआ अंधा ही है, धृतराष्ट्र जैसा। अर्थात् सिर्फ आत्मा ही देख सकता है। और यह तो आत्मा की हाज़िरी हो गई उतने समय के लिए। कितनी जागृति आ जाती है! ऐसा कहीं कोई मनुष्य कर नहीं सकता! यह तो अगर आत्मा प्राप्त हुआ हो, अक्रम विज्ञान से, तभी हो सकता है, नहीं तो नहीं हो सकता। क्रमिकमार्ग में भी ऐसा आत्मा नहीं हो सकता। वहाँ पर कुछ अलग प्रकार से होता है, किन्तु ऐसा नहीं हो पाता।

देखनेवाला स्पष्ट आत्मा है, अर्थात् आत्मा ज्ञायक और द्रश्य, वह ज्ञेय। आत्मा, ज्ञाता व दृष्ट। यह तो आत्मा स्पष्ट हो गया, स्पष्टवेदन यह। इस प्रकार किसी को स्पष्टवेदन होते-होते-होते एक दिन स्पष्टवेदन हो जाता है!

ज्ञाताभाव वह आत्मचारित्र

अब उस समय देखनेवाला कौन है? तो कहे, देखनेवाला आत्मा। उस घड़ी आत्मचारित्र कहा जाता है। सामायिक में आत्मा आत्मचारित्र में होता है। ज्ञाता जब ज्ञाताभाव में आ जाए, तब उसे आत्मचारित्र कहते हैं।

अहंकार तो ये सभी दोष बिल्कुल भी नहीं देख सकता। बुद्धि और चित्त ये दोनों देख सकते हैं, और उसमें भी बुद्धि ज्यादा देख सकती है। किन्तु बुद्धि कुछ ही, दो-पाँच-सात दोष जो बड़े-बड़े होते हैं न, उन्हें दिखाकर कहती है कि इतने दोष है। फिर और आगे उसे दिखता नहीं है। उससे आगे का प्रज्ञा देख

सकती है। और उससे भी आगे का आत्मा देखता है, सीधा-डायरेक्ट। आत्मा डायरेक्ट देखता है इसलिए दर्शनक्रिया और ज्ञानक्रिया कही जाती है।

दर्शनक्रिया-ज्ञानक्रिया

प्रश्नकर्ता : दादा, वो जो बात निकली न सत्संग में कि सामायिक में कौन देखता है? आपने कहा कि सामायिक में अंतःकरण की मौजूदगी होती ही नहीं। तो फिर यह सब कौन देखता है?

दादाश्री : वह तो अहंकार और बुद्धि दोनों मिलकर, और वे तटस्थ दृष्टा है। अतः इसमें वे क्रियाकारी नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : उनकी क्रिया ही नहीं है।

दादाश्री : क्रियाकारी तो दो ही चीजें हैं कि आत्मा खुद के स्वभाव से ही प्रकाशमान होता है और उसके भीतर वे चीजें प्रकाशमान होती हैं। वे जो प्रकाशमान होती हैं उन्हें वह देखता है। इच्छावाला, जिसने ऐसा तय किया है कि मुझे देखना है, वहाँ वह इच्छावाला देखता है।

प्रश्नकर्ता : वह जिसने तय किया है कि मुझे देखना है, वह देखनेवाला अहंकार ही हुआ न!

दादाश्री : अहंकार और बुद्धि, वह जो है, वह डिस्चार्ज अहंकार है। वह कहता है कि मुझे देखना है। वह देख लेता है, लेकिन वहाँ उसका किसी प्रकार का कर्तव्यपना नहीं है, कर्तव्यपना आत्मा का है और आत्मा भी कर्ता नहीं है, लेकिन उसकी ज्ञानक्रिया है।

जहाँ पर बुद्धि नहीं देख सकती, वहाँ आत्मा काम कर रहा है, उस घड़ी आत्मा का ज्ञान क्रियाभ्याम् और दर्शन क्रियाभ्याम् शुरू होते हैं। यह तो सामायिक और आत्मचारित्र, दोनों ही साथ में हो जाते हैं। एक तरफ खुद के दोष दिखाई देते हैं और साथ ही आत्मचारित्र। निश्चय से आत्मचारित्र और व्यवहार से दोष। उसे क्या कहते हैं? ज्ञानक्रिया कहते हैं। एक साथ सब इकट्ठे दिखाई दे तो दर्शनक्रिया। एक-एक

करके ब्योरेवार दिखाई दे वह ज्ञानक्रिया। ज्ञानक्रिया और दर्शनक्रिया भीतर चलती रहती हैं।

सामायिक में प्रवर्तन शुद्धात्मा का

प्रश्नकर्ता : आपने कहा है कि सामायिक करते समय, अहंकार उपस्थित नहीं होता है। तो उस समय अहंकार कहाँ चला जाता है?

दादाश्री : अंतःकरण उसमें भाग ही नहीं लेता। विदाउट अंतःकरण वह काम चलता रहता है।

प्रश्नकर्ता : वह कहता है मैं, दस सालों तक, पंद्रह सालों तक जा सका (१०-१५ साल पुराना देख सका)। तो वह जानेवाला कौन है?

दादाश्री : वही आत्मा है। जानेवाला आत्मा नहीं है। जो दिखाता है वह आत्मा है और देखनेवाला कौन? कि जिसे यह रोग है, वह। जिसकी वह अवस्था है वह देखनेवाला है और आत्मा प्रकाश देता है। उस समय वास्तव में शुद्धात्मा का ही प्रवर्तन है।

प्रश्नकर्ता : आत्मा को तो दृष्टा भाव ही होता है न? यह जो साठवाँ, पचपनवाँ, पैतालीसवाँ, यह पूरा जिसने देखा, वह कौन है?

दादाश्री : हाँ, विस्तारपूर्वक दिखाई देना यानी जनवरी का जनवरी में, फरवरी का फरवरी में, इस तरह।

प्रश्नकर्ता : हाँ, तब फिर अगर उसमें अहम् नहीं होगा तो देखनेवाला कौन है।

दादाश्री : अहम् नहीं, इसमें बिल्कुल भी अहम् नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर बुद्धि भी नहीं है?

दादाश्री : अहम् और बुद्धि दोनों साथ मिलकर वह देखते हैं। वही सब करते हैं वे। बाकी, प्रकाश आत्मा का है और अहम् को अर्थात् बुद्धि को पता चलता है कि ओहोहो! हमने ऐसा किया था, यह ऐसा किया था, ऐसा किया था।

मतलब अहम् इस जगह पर रहता है, वहाँ कार्यकर्ता के तौर पर नहीं है। वह तो फिल्म को देखनेवाला और जाननेवाला है। जाननेवाला आत्मा है और वही उसे (अहम् को) दिखाता है कि यह ऐसे हुआ, यह वैसे हुआ, यह ऐसे हुआ, अर्थात् बीच में वह देखनेवाला यह सब देख लेता है। बाकी अहंकार का कोई कार्य इसमें होता ही नहीं। जो कार्य है, वह तो आत्मा का खुद का ही कार्य है। हमने नैमित्तक कहा है न कि अब तक से लेकर बचपन तक के सारे भाव दिखलाता है। अतः उसके मुताबिक विचरता है। अब, यह मूल आत्मा नहीं है, प्रज्ञास्वरूप आत्मा है। अब आत्मा का इससे बड़ा और कोई अनुभव नहीं है।

देखनेवाले को देखा सामायिक में

आत्मा ने, आपने देखनेवाले को भी देखा भीतर! वर्ना मनुष्य में इतना याद करने की शक्ति तो होती ही नहीं है न! और यह तो पल-पल का देख लेता है, पल-पल का।

इस संसार में अन्य कोई उपाय नहीं है कि जिससे दो दिन पहले का भी याद आ जाए। यह तो आत्मशक्ति काम कर रही है। अतः आत्मशक्ति की हाजिरी में प्रज्ञाशक्ति ज़बरदस्त काम कर रही है। प्रज्ञाशक्ति और शुद्ध चित्त दोनों साथ मिलकर ज़बरदस्त काम करते हैं। भीतर कुरेद-कुरेदकर यों सब कहाँ-कहाँ से ढूँढ निकालते हैं, कि खुद को तो याद भी नहीं हो, ऐसे सारे गुनाह। याद नहीं हों वे भी दिखाई देते हैं।

प्रश्नकर्ता : आपने ये जो अभी कहा न कि सामायिक में देखनेवाला देखता है, तो यह ज़रा समझ में नहीं आया।

दादाश्री : यह सामायिक तो आत्मसामायिक कहलाती है। आत्मा के अलावा बुद्धि की शक्ति है जो बाहर की चीज़ें देख सकती है, संसारी चीज़ों को। और इन सभी दोषों को वह (आत्मा) देखता है।

अतः यह जानने की शक्ति व देखने की शक्ति आत्मा की है।

आत्मा स्व-पर प्रकाशक है इसलिए वह देख सकता है। खुद का भी देखता है और बाहर जो है, उसे भी देखता है। स्व-पर प्रकाशक अर्थात् संसार को भी प्रकाशमान कर सकता है और खुद को भी प्रकाशमान करे, दोनों देख सकता है।

प्रश्नकर्ता : चंदू प्रतिक्रमण करता है और आत्मा उसे देखता है किन्तु आपने तो ऐसा कहा कि देखनेवाले को वह देखता है।

दादाश्री : हाँ, मतलब वास्तव में तब मूल आत्मा ही काम कर रहा है। इसलिए हमने यों अलग किया। मूल आत्मा ही काम कर रहा है। जो स्व-पर प्रकाशक है, वही काम कर रहा है। इसीलिए तो उस स्व-पर प्रकाशक का आपको यकीन हो गया कि स्व-पर प्रकाशक भीतर है और कार्य कर रहा है, यह हमने देखा। अब देखनेवाला को देखा। देखनेवाले को देखते समय अन्य कोई अभ्यास नहीं रहता। लेकिन यहाँ हमें विश्वास हो गया कि यह किसने देखा! अतः हम किसे देखते या ढूँढते हैं? तो यह कि, 'देखनेवाले को हमने देखा'

करनेवाला और जाननेवाला, दोनों जुदा

प्रश्नकर्ता : तो जो इस सामायिक में बैठता है, वह कौन है? जो सामायिक करते वक़्त बैठता है, वह कौन है?

दादाश्री : वह तो, जो पूरा दिन गड़बड़ करता है न, वह सामायिक करने बैठता है। किसी और को तो सामायिक करने की ज़रूरत ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : मतलब सामायिक को जाननेवाला जुदा ही है? वह पूरी प्रक्रिया को जाननेवाला जुदा ही रहता है?

दादाश्री : जाननेवाला तो देखता रहता है। सामायिक करने का कारण क्या है कि अब तक ये

दादावाणी

सभी नुकसान उठाने की वजह से, यह देह (जो इतनी उच्चता पर) पहुँचना चाहिए न, वह वैसी नहीं है, इसलिए उसे वैसी करने हेतु यह सब करना है। अक्रम विज्ञान है न, इसलिए घाटे में भी प्राप्ति हो गई है। अतः घाटे की पूरी तरह से भरपाई कर देनी है।

प्रश्नकर्ता : सामायिक करते वक्त यदि मुझे उठकर बाहर जाना पड़ा तो इससे क्या नुकसान होता है?

दादाश्री : कोई हर्ज नहीं। उस घड़ी तुम कौन?

प्रश्नकर्ता : उस घड़ी आत्मा खुद या चंदूभाई?

दादाश्री : प्रज्ञा। आत्मा खुद हस्तक्षेप ही नहीं करता। सबकुछ सेक्रेटरी (प्रतिनिधि)! सेक्रेटरी टु द गवर्नमेन्ट।

दोषों की निर्जरा, प्रतिक्रमण-सामायिक से

प्रश्नकर्ता : दादा, यह सामायिक करने के बाद, ये जो सभी कर्म हैं, पहले जो दोष हुए थे, वे सभी खत्म हो जाएँगे न? फिर भीतर परमाणु नहीं रहेंगे न?

दादाश्री : खत्म हो जाते हैं। जो-जो दोष दिखाई दें, उतने खत्म हो जाते हैं, इसीलिए यह करना है न हमें! समताभाव से जितने दोषों को देखा, उतने खत्म हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : खत्म हो जाने के बाद हम अगर

फिर से सामायिक में बैठें, प्रतिक्रमण करने, तब क्या वे फिर से दिखाई देंगे या फिर खत्म ही हो गए?

दादाश्री : फिर दूसरे दिखाई देते हैं। दूसरे दोष दिखाई देते हैं। और वे भी परतवाले होते हैं। परतें ज़्यादा हो तो वापस वही दोष दिखाई देते हैं लेकिन खास करके दूसरे दोष भी दिखते हैं। परतें निकलती रहती हैं, न सभी।

प्रश्नकर्ता : पहले के दोषों का प्रतिक्रमण करने के बाद फिर स्थूल, सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम वे सभी आते हैं?

दादाश्री : वह तो, उसका स्वभाव जितना व्यक्त हुआ है उतना ही दिखाएगा। उससे ज़्यादा नहीं दिखाएगा। सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम तो चीज़ ही अलग है। मुझे वे जहाँ तक दिखता है उतने आपको नहीं दिखता। जिस हद तक व्यक्त हुआ है, उतना ही दिखता है। जितना हमें दिखाए उतना सही, उतने कम हो गए, हमें तो मोक्ष में जाने से काम है न?

जगत् जो सामायिक करता है, वह सामायिक अलग है और अपना यह अक्रम की सामायिक, वह अलग प्रकार की सामायिक है। ग़ज़ब की ऊँची सामायिक है यह! ऐसी सामायिक तो होती ही नहीं न! यह अलौकिक विज्ञान है! यह विज्ञान तो पूरा काम ही कर दे!

जय सच्चिदानंद

‘दादावाणी’ के सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महीने 15वीं तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को दादावाणी विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे प्राप्त पत्रिका पर अपना नाम, पता, पीनकोड (ज़ीपकोड) आदि जाँच कर लें, जो दादावाणी पत्रिका के कवर के उपर लिखा हुआ रहता है। यदि उसमें कोई भूल हो तो हमें पत्र से (अडालज त्रिमंदिर के पते पर) या इ-मेल से (dadavani@dadabhagwan.org पर) सूचित करें।

मुख्य सेन्ट्रों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, अहमदाबाद: (079) 27540408, वडोदरा : (दादा मंदिर) (0265) 2414142, राजकोट त्रिमंदिर: 9274111393, भूज त्रिमंदिर: (02832) 290123, गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, मुंबई: 9323528901, दिल्ली: 9310022350, बंगलूर: 9590979099, कोलकता: 033-32933885, यु.के.: +44(0)330-111-DADA (3232), यु.एस.ए.-केनेडा: +1-877-505-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया: +61 421127947, केन्या: +254 722722063

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

१२-१४ जून : पूज्यश्री ने स्थानीय महात्माओं के साथ अमरिका में सेनफ्रान्सिस्को के कई विशेष स्थलों की मुलाकात ली, जिनमें से १९३० में बने हुए गोल्डन गेट ब्रिज और क्रोकड स्ट्रीट भी थे। पूज्यश्री महात्माओं के संग जहाज़ (क्रुज़) में बैठें और कुछ समय उन्होंने क्रुज़ का संचालन भी किया। सेनहोज़े में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि के दौरान १४० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

१५-१७ जून : अमरिका के सिमी वेली शहर में पहली बार आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि में ८५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया, जिसमें कई अमरीकी लोग भी थे।

१८-२० जून : टेक्सास शिविर में लगभग २२५ महात्माओं को पूज्यश्री के पावन सानिध्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महात्माओं ने पूज्यश्री के संग समुद्र किनारे वॉक और गरबा किया और क्रुज़ ट्रीप का आनंद उठाया।

२१-२४ जून : इस बार केनेडा के टोरेन्टो शहर में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम में सिर्फ टोरेन्टो से ही नहीं, लेकिन केनेडा के विविध शहरों से भी मुमुक्षु पधारे थे। दादा का विज्ञान अन्य देशों की तरह केनेडा में भी सिर्फ बड़े शहरों में सिमित न रहकर आसपास के छोटे शहरों और गाँवों में भी पहुँच रहा है। १९० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। २४ जून को पूज्यश्री की निश्रा में केलसो लेक की एक दिवसीय पिकनिक का आयोजन हुआ। जिसमें २५० महात्माओं ने भाग लिया। पूज्यश्री ने इन्फॉर्मल सत्संग किया और महात्माओं को पूज्यश्री के दर्शन का भी लाभ मिला। गोधरा त्रिमंदिर पर ब्रह्मचर्य के ध्येयवाले युवकों के लिए शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें १८ से ३० साल की उम्रवाले लगभग ४०० युवकों ने भाग लिया। उनमें से ५० युवक पहली बार शिविर में आएँ थे। शिविर में ब्रह्मचर्य से संबंधित वी.सी.डी. सत्संग, आप्तपुत्रों द्वारा ग्रुप डिस्कशन, सामायिक, भक्ति, नाटक, आरती वगैरह कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

२८-३० जून : शिकागो और उसके आसपास की जगहों के महात्माओं के लिए गेलेना रीसॉर्ट में तीन दिवसीय शिविर आयोजित हुई। शिविर में पूज्यश्री का तथा विवाहित भाई-बहनों के लिए अलग से आप्तपुत्र-आप्तपुत्री के सत्संग हुए। पूज्यश्री के संग महात्माओं ने क्रुज़ में सवारी, सत्संग, गरबा और फैमिली फोटो सेशन का अपूर्व आनंद उठाया।

२-४ जुलाई : न्यूयॉर्क में आयोजित सत्संग कार्यक्रम में २२० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। इस बार ७०० से भी अधिक महात्माओं ने कार्यक्रम का लाभ लिया। सेवार्थी महात्माओं के लिए भी विशेष सत्संग का आयोजन हुआ।

५-८ जुलाई : न्यू जर्सी में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम में ३०५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। विविध कार्यक्रमों की शृंखला की वजह से पूरा माहौल मिनी शिविर जैसा लग रहा था। सेवार्थी महात्माओं के लिए भी विशेष दर्शन के कार्यक्रम का आयोजन हुआ। समग्र कार्यक्रम में लगभग १२०० महात्माओं ने भाग लिया।

६-७ जुलाई को अडालज त्रिमंदिर में आयोजित विवाहित भाईयों की दो दिन की शिविर में लगभग १२०० महात्माओं ने भाग लिया। शिविर में आप्तपुत्रों द्वारा ग्रुप डिस्कशन तथा सामूहिक सत्संग कार्यक्रम का आयोजन हुआ। पूज्यश्री ने भी युएसए से टेलिफोनिक बातचीत दरमियान ब्रह्मचर्य के महत्व पर जोर दिया।

८ जुलाई को अडालज त्रिमंदिर में पूज्य नीरू माँ का ४६वाँ ज्ञानदिन मनाया गया। महात्माओं ने सुबह प्रार्थना और आरती की, तथा पूज्य नीरू माँ के सत्संग की पर विशेष वीडियो सी.डी. देखी। रात को भक्ति का विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिनमें पूज्य नीरू माँ रचित पद गाए गए और पूज्यश्री ने इन्टरनेट द्वारा महात्माओं के साथ वीडियो सत्संग किया।

९-११ जुलाई : अमरिका के शारलोट शहर में पहली बार पूज्यश्री के सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें लगभग ४५० मुमुक्षु उपस्थित थे, इनमें से ज्यादातर पूज्यश्री का टी.वी. पर कार्यक्रम देखते थे और खास करके प्रत्यक्ष दर्शन की अभिलाषा से आए थे। २४० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। फॉलोअप सत्संग तथा पूज्यश्री के दर्शन के कार्यक्रम भी आयोजित हुए।

१२-१४ जुलाई : अटलान्टा शहर में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम में ११५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। लगभग ६०० महात्मा कार्यक्रम में उपस्थित रहें। ज्ञानविधि पूर्व आप्तपुत्र सत्संग हुआ तथा सेवार्थियों के लिए विशेष रूप से पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम रखा गया।

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

- अहमदनगर** दिनांक : 21 अगस्त, समय : शाम 6-30 से 8-30 संपर्क : 9371587103
स्थल : सरदार पटेल वाडी, तिलक रोड.
- गुडगाँव** दिनांक : 20 सितम्बर, समय : शाम 6 से 8 संपर्क : 9810307602
स्थल : सिद्धेश्वर स्कूल बेसमेन्ट हॉल, गुरुद्वारा के पास, सब्जी मंडी, गुडगाँव.
- गाजियाबाद** दिनांक : 21 सितम्बर, समय : शाम 4-30 से 7 संपर्क : 9968738972
स्थल : सेक्टर-17, कोनार्क एन्क्लेव, 17E/227, E -ब्लोक, वसुंधरा.
- मेरठ** दिनांक : 22 सितम्बर, समय : शाम 5 से 7 संपर्क : 9410607553
स्थल : पीपीपी कोन्फ्रेंस हॉल, दास मोटर्स के पास, आबू लेन.
- हरिद्वार** दिनांक : 23 सितम्बर, शाम 4 से 6-30 संपर्क : 9719415074
स्थल : सियाराम जानकी वल्लभ सेवा सदन, दुधारी चौक, साईं बाबावाली गली, भूपतवाला.
- जालंधर** दिनांक : 24 सितम्बर, समय : शाम 4-30 से 7 संपर्क : 9814063043
स्थल : अर्जुन हॉल, देवी तालाब मंदिर, जालंधर सिटी.
- लुधियाना** दिनांक : 25 सितम्बर, समय : शाम 6 से 8-30 संपर्क : 9888821088
स्थल : राम झरोखा कोठी नं. 1082, सेक्टर-39, अर्बन एस्टेट, सेक्रेड हार्ट कोन्वेन्ट स्कूल के पास, चंडीगढ़ रोड.
- चंडीगढ़** दिनांक : 26 सितम्बर, समय : शाम 6-30 से 9 संपर्क : 9872188973
स्थल : सनातन धर्म मंदिर हॉल, सेक्टर 32D.
- कुरुक्षेत्र** दिनांक : 27 सितम्बर, समय : शाम 4 से 6 संपर्क : 9671868450
स्थल : कम्प्युनिटी सेन्टर, मेन मार्केट, सेक्टर-5, हुडा कुरुक्षेत्र.
- सोनीपत** दिनांक : 28 सितम्बर, स्थल और समय की जानकारी के लिए संपर्क : 9818229870
- दिल्ली** दिनांक : 29 सितम्बर, समय : सुबह 10-30 से 4-30 संपर्क : 9810098564
स्थल : लौरैल हाईस्कूल, शिवा मार्केट के सामने, अग्रसेन धर्मशाला के पास, पीतमपुरा.
- दिल्ली** दिनांक : 30 सित. से 2 अक्टू. स्थल और समय की जानकारी के लिए संपर्क : 9810098564
- मड़गाँव** दि. : 18 सित., संपर्क : 9343401229 **हावेरी** दि.: 22 सित., संपर्क : 9343401229
- बेलगाँव** दि. : 19 सित., संपर्क : 9343401229 **होसपेट** दि.: 23 सित., संपर्क : 9343401229
- हुबली** दि. : 20 सित., संपर्क : 9343401229 **गडग** दि.: 24 सित., संपर्क : 9343401229
- दावनगोरे** दि : 21 सित., संपर्क : 9343401229 **धारवाड़** दि.: 25 सित., संपर्क : 9343401229
- चित्रदुर्ग** दि. : 22 सित., संपर्क : 9343401229 **बेंगलोर** दि.: 21 से 27 सित., संपर्क : 9590979099

स्थल और समय की जानकारी के लिए उपर दिए गए फोन नं. पर संपर्क किजिए।

दादावाणी

Atmagnani Pujya Deepakbhai's New Zealand-Australia-Singapore Satsang Schedule - 2013

Date	Day	Session	From	To	Venue	Contact No. & Email
NEW ZEALAND SATSANG DETAILS						
13-Sep	Fri	Satsang	7.00PM	9.00PM	Dominion Road school hall	+64 21 037 6434
14-Sep	Sat	GNAN VIDHI	4.00PM	8.00PM	14 Quest Terrace , Off Akarana Ave.	+64 9 9486119
15-Sep	Sun	Satsang	4.30PM	6.30PM	Mt Roskill, Auckland.	veeralsheth@hotmail.com
AUSTRALIA SATSANG DETAILS						
17-Sep	Tue	Mahatma Only Shibir	ALL DAY		Blue Lagoon Beach Resort	+61-430123375
18-Sep	Wed		ALL DAY		10 Bateau Bay Road	
19-Sep	Thu		ALL DAY		Bateau Bay, NSW 2261	
20-Sep	Fri	Satsang	7.30PM	10.00PM	Bowman Hall	+61-421127947
21-Sep	Sat	GNAN VIDHI	4.00PM	7.00PM	Civic Centre, Campbell Street	+61-402179706
22-Sep	Sun	Satsang	10.00AM	12.30PM	Blacktown, NSW 2148	+61-2-96260029
					Sydney.	Sydney@au.dadabhagwan.org
SINGAPORE SATSANG DETAILS						
24-Sep	Tue	Satsang	7.30PM	9.30PM	Sri Senpaga Vinayagar Temple 19 Ceylon Road,	+65 91457800, +65 81129229 singapore.dadabhagwan@hotmail.com
25-Sep	Wed	GNAN VIDHI	6.00PM	10.00PM	Singapore - 429613	hotmail.com

**परम पूज्य दादा भगवान का १०६वाँ जन्मजयंती महोत्सव
भरूच शहर (गुजरात) में - दि. १३ से १७ नवम्बर, २०१३**

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- ✦ 'आस्था' पर हर रोज रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
 - ✦ 'दिशा' टीवी पर हर रोज सुबह ८-२० से ८-५० (हिन्दी में)
 - ✦ 'डीडी-गिरनार' पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० ज्ञानवाणी (गुजराती में)
 - ✦ 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- USA**
- ✦ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)
- UK**
- ✦ 'विनस' (डीश टीवी चैनल 805-युके) पर हर रोज सुबह ८ से ८-३० (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- ✦ 'साधना' पर हर रोज - शाम ७-१५ से ७-४५ (हिन्दी में) - समय में परिवर्तन
 - ✦ 'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर रविवार सुबह ६-३० से ७ (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम
 - ✦ 'दूरदर्शन' पर गुजरात में हर रोज दोपहर ३-३० से ४, 'जरा जुओ जागीने' (गुजराती में)
 - ✦ 'डीडी-गिरनार' पर हर रोज रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)
 - ✦ 'डीडी-सह्याद्रि' पर हर रोज सुबह ७-३० से ८ (मराठी में)
- USA**
- ✦ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह १० से १०-३० EST (गुजराती में)
- USA-UK**
- ✦ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज रात ९-३० से १० (गुजराती में)

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

दि. २८ अगस्त (बुध), रात १० से १२ - जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति कार्यक्रम

पर्युषण पर्व पारायण : दर्शन - दि. १ सितम्बर तथा सत्संग दि. २ से ९ सितम्बर, २०१३

पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-७-८ और क्लेश रहित जीवन (गुजराती) किताबों का वाचन और उन पर सत्संग होगा। हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए।

सूचना : १) यदि आप इस पारायण में भाग लेना चाहते हो, तो रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। अधिक जानकारी के लिए अडालज त्रिमंदिर के रजिस्ट्रेशन विभाग के फोन नं. 079-39830400 (सुबह 9 से शाम 7) पर संपर्क करें।

२) स्त्रियों एवं पुरुषों के रहने की व्यवस्था अलग-अलग जगहों पर हो सकती है, इसलिए अपना सामान अलग से लाएँ।

३) ओढ़ने-बीछने का चद्दर, एयर पीलो साथ लाएँ। किसी भी प्रकार की कीमती चीजें साथ में न लाएँ।

४) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्त आई-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

दि. ३ नवम्बर (रवि), रात ८ से १० - दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति

दि. ४ नवम्बर (सोम), सुबह ८-३० से १ - नूतन वर्ष (वि.सं.) के अवसर पर दर्शन-पूजन-भक्ति

पूणे

दि. २३-२४ अगस्त (शुक्र-शनि), शाम ६ से ८-३०-सत्संग तथा २५ अगस्त (रवि), शाम ५ से ८-३०-ज्ञानविधि

स्थल : गणेश कला क्रिडा मंच, नहेरु स्टेडियम केम्पस, स्वारागेट बस स्टेन्ड के पास. संपर्क : 9422660497

हुबली

दि. २८ सितम्बर (शनि), शाम ६-३० से ९-सत्संग तथा २९ सितम्बर (रवि), शाम ४ से ७-३०-ज्ञानविधि

स्थल : श्री सुजयेन्द्र सभा भवन, राघवेन्द्र मठ, भवानीनगर, हुबली (कर्णाटक). संपर्क : 7795394434

दि. ३० सितम्बर (सोम), शाम ६-३० से ९-आप्तपुत्र सत्संग - गुजरात भवन, देशपांडे नगर, हुबली.

बेंगलोर

दि. २९ सितम्बर (रवि), शाम ४-३० से ६-३०-आप्तपुत्र सत्संग तथा ३० सितम्बर (सोम), शाम ६ से ९-ज्ञानविधि

स्थल : शिक्षक सदन ओडिटोरियम होल, कावेरी भवन के सामने, के.जी. रोड. संपर्क : 9590979099

दि. २ अक्टू. (बुध), शाम ६ से ८ - आप्तपुत्र सत्संग - महाराष्ट्र मंडल, 2nd क्रोस, रामचंद्र रोड. गांधीनगर.

दिल्ली

दि. १९ और २१ अक्टू. (शनि-सोम)-शाम ६ से ८-३०- सत्संग तथा २० अक्टू. (रवि), शाम ४-३० से ८-ज्ञानविधि

स्थल : लौरैल हाईस्कूल, शिवा मार्केट के सामने, अग्रसेन धर्मशाला के पास, पीतमपुरा. संपर्क : 9811488263

जबलपुर

दि. २३ अक्टूबर (बुध)-शाम ६ से ८-३०- सत्संग तथा २४ अक्टूबर (गुरु), शाम ५ से ८-३०-ज्ञानविधि

स्थल की जानकारी के लिए संपर्क : 9407022263

कानपुर

दि. २६ अक्टूबर (शनि) शाम ६ से ८-३० - सत्संग तथा २७ अक्टूबर (रवि), शाम ५ से ८-३० - ज्ञानविधि

स्थल : बाल भवन, 16/99A, फुल बाग, कानपुर (उत्तर प्रदेश). संपर्क : 8948564627

अगस्त २०१३
वर्ष-८, अंक-१०
अखंड क्रमांक - ९४

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 30-6-2014
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

गाँठों (गंथियों) को विलय करने के लिए सामायिक

यहाँ पर जो सामायिक की जाती है, वह किसलिए करनी पड़ती हैं? आप 'अक्रम मार्ग' से, कर्म खपाए बिना लिफ्ट से ऊपर आ गए हैं। इसलिए अंदर गाँठें साबुत ही हैं, उन गाँठों को विलय करने की सामायिक आप सभी करते हैं। जो गाँठ बड़ी होती है, उसे झेय की तरह सामने रखे और 'खुद' ज्ञाता की तरह रहे और एक घंटा ऐसे सामायिक में बिकाले तो वह गाँठ उतनी मात्रा में विलय होती है। यदि गाँठ बहुत बड़ी हो तो उसमें कई घंटे लग जाते हैं। रोज एक-एक घंटा ऐसे सामायिक में जाए तो इसी जन्म में सभी गाँठें खत्म हो जाएगी। यह अक्रम ज्ञान है, इसलिए सामायिक करके कर्मों को खत्म कर सकता है।

- दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.